ॐ

श्री

जिनेन्द्र पूजा संग्रह

: प्रकाशक :

श्री मद्रास दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट
१५, चंद्रप्पा मुदली स्ट्रीट,
चेन्नाई-६०००७९

अनुक्रमणिका

1st DAY POOJA

विनयपाठ 1
देव-शास्त्र-गुरु पूजा 4
दशलक्षणधर्मपूजा 9
उत्तम क्षमाधर्म अर्घ 10
अर्घावली 11
समुच्चय अर्घ 14
शांतिपाठ 15
पंच परमेष्ठीकी आरती 16

2nd DAY POOJA

आराधना पाठ 17
श्री महावीर-जिनपूजा 19
दशलक्षणधर्मपूजा 22
उत्तम मार्दवधर्म अर्घ 23
अर्घावली 24
समुच्चय अर्घ 27
शांतिपाठ 29
श्री महावीरजिन आरती 30

3rd DAY POOJA

विनयपाठ 31
श्री शान्तिनाथ जिनपूजा 34
दशलक्षणधर्मपूजा 35
उत्तम आर्जवधर्म अर्घ 36
अर्घावली 38
समुच्चय अर्घ 41
शांतिपाठ 42
श्री शांतिजिनकी आरती 43

4th DAY POOJA

आराधना पाठ 44
श्री चन्द्रप्रभ-जिनपूजा 46
दशलक्षणधर्मपूजा 48
उत्तम सत्यधर्म अर्घ 49
अर्घावली 50
समुच्चय अर्घ 53
शांतिपाठ 54
श्री चंद्रप्रभु जिन आरती 55

5th DAY POOJA

विनयपाठ 56
श्री नेमिनाथ-जिनपूजा 59
दशलक्षणधर्मपूजा 60
उत्तम शौचधर्म अर्घ 61
अर्घावली 63
समुच्चय अर्घ 66
शांतिपाठ 67
आरती 68

6th DAY POOJA

आराधना पाठ 69
श्री सीमंधर-जिनपूजा 71
दशलक्षणधर्मपूजा 73
उत्तम संयमधर्म अर्घ 74
अर्घावली 75
समुच्चय अर्घ 78
शांतिपाठ 79
श्री सीमंधरजिनकी आरती 81

7th DAY POOJA

विनयपाठ 82
श्री कुंदकुंदाचार्यदेवपूजा 85
दशलक्षणधर्मपूजा 86

उत्तम तपधर्म अर्घ 87
अर्घावली 89
समुच्चय अर्घ 92
शांतिपाठ 93
श्री कुंदकुंदाचार्यदेवकी आरती ... 94

8th DAY POOJA

आराधना पाठ 95
स्वानुभूति-तीर्थ स्वर्णपुरी पूजा ... 97
दशलक्षणधर्मपूजा 99
उत्तम त्यागधर्म अर्घ 100
अर्घावली 102
समुच्चय अर्घ 104
शांतिपाठ 106
ॐ जय जिनवरदेवा 107

9th DAY POOJA

विनयपाठ 108
श्री धातकीविदेह-भाविजिनपूजा 111
दशलक्षणधर्मपूजा 113
उत्तम आकिंचनधर्म अर्घ 114
अर्घावली 115
समुच्चय अर्घ 118
शांतिपाठ 120
श्री सूर्यकीर्तिजिन आरती 121

10th DAY POOJA

आराधना पाठ 122
रत्नत्रयपूजा 124
श्री चौबीस-जिनपूजा 125
दशलक्षणधर्मपूजा 127
उत्तम ब्रह्मचर्यधर्म अर्घ 128
अर्घावली 129
समुच्चय अर्घ 132
शांतिपाठ 134
चौवीस तीर्थंकरोकी आरती 135

11th DAY POOJA

विनयपाठ 136
क्षमावणी पूजा 139
अर्घावली 143
समुच्चय अर्घ 146
शांतिपाठ 148
पंच परमेष्ठीकी आरती 149

Jinmandir Annual Day (Dhvajarohan) Pooja

देव-शास्त्र-गुरुपूजा 153
श्री महावीर-जिनपूजा 157

Samyaktva Jayanti Pooja

रत्नत्रयपूजा 168
श्री चौबीस-जिनपूजा 170

Gurudevshri Janm-Jayanti Pooja

श्री धातकीविदेह-भाविजिनपूजा 181
श्री सीमंधर-जिनपूजा 184

Bahenshri Janm-Jayanti Pooja

भावी मुख्य गणधर पूजा 195
स्वानुभूति-तीर्थ स्वर्णपुरी पूजा . 199

Bhagvan Mahavir Nirvan Pooja

पीठकादि पूजा 210
श्री महावीर-जिनपूजा 215
श्री महावीरजिन आरती 222

ॐ

पूजनकी विधि

1. स्वच्छ खाली थालीमें पूर्ण स्वस्तिक (साथियो) करना।
2. पश्चात् नीचे 'श्री' शब्द लिखना चाहिए।

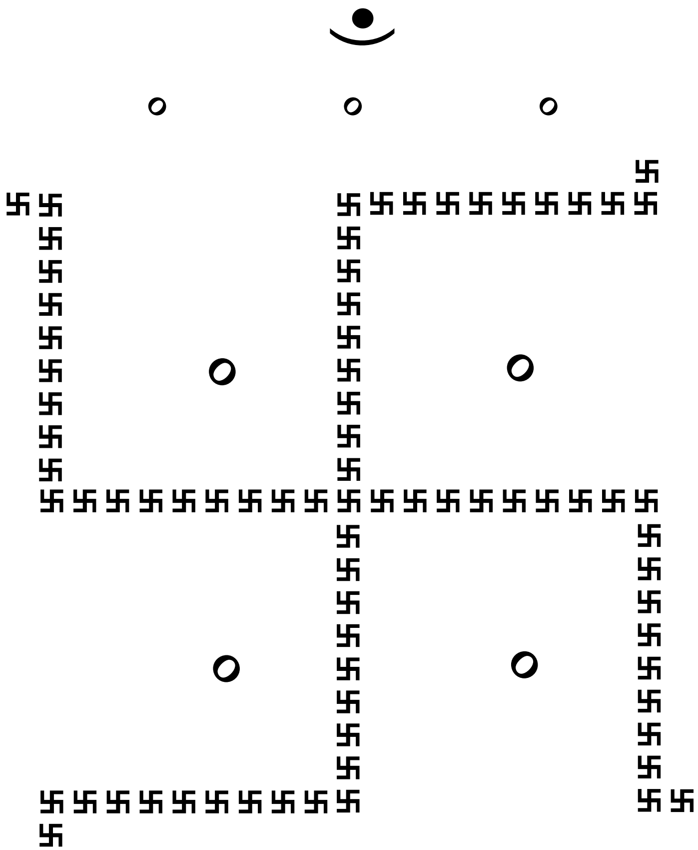

श्री

1st DAY POOJA

विनयपाठ

(दोहा)

इहि विधि ठाड़ो होयके, प्रथम पढे जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥
अनंत चतुष्टयके धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति वधूके कंथ तुम, तीन भुवनके राज॥२॥
तिहुं जगकी पीडा हरण, भवदधिशोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्वके, शिवसुखके करतार॥३॥
हरता अघअंधियारके, करता धर्म प्रकाश।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुणराश॥४॥
धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोजको, नावत तिहुं जगभूप॥५॥
में वंदौं जिनदेवको, कर अति निरमल भाव।
कर्मबंधके छेदने, और न कछु उपाय॥६॥
भविजनको भवकूपतैं, तुम ही काढनहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार॥७॥
चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगतमें भविजनको शिव गैल॥८॥
तुम पद पंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रताको धरै, विष निरविषता थाय॥९॥
चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतें आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥

तुम विन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल विन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेय।
अंजनसे तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषे, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जगमें रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेटयौ अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥
कित निगोद, कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजें सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरणके तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिंधुमें, खेओ लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारकैं, कीजे आप समान॥१८॥
तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हौं, नेक निहार निकार॥१९॥
जो में कहहूं औरसों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तौसों बनी, तातैं करौं पुकार॥२०॥
वंदो पाँचौं परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघन हरन मंगल करन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौवीसौं जिनपद नमों, नमो शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥२२॥

❀

पूजाकी प्रारंभिक विधि

ॐ जय जय जय, नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीँ अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः
(उपर्युक्त पाठ पढ़कर पुष्प यानी(अर्थात्) चंदनमिश्रित चावल थालीमें किये हुए स्वस्तिकके ऊपर चढ़ाना।)

मंगल

चत्तारि मंगलं—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।

चत्तारि सरणं पव्वज्ञामि—अरहंते सरणं पव्वज्ञामि, सिद्धे सरणं पव्वज्ञामि, साहू सरणं पव्वज्ञामि, केवलिपण्णत्तो धम्मं सरणं पव्वज्ञामि।

ॐ ह्रीँ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलि चढ़ाना)

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः;
धवलमंगलगानरवाकुले जिनग्रहे जिननाथमहं यजे।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरतीर्थंकराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री कुंदकुंदाचार्यदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीसूर्यकीर्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरु पूजा

(हरिगीत)

सन्मार्गदर्शी, बोधिदाता, कृपा अति वर्षावता,
आश्रय अने करुणा थकी, अम रंकने उद्धारता;
विमळज्ञानी शान्तमूर्ति, दिव्य गुणे दीपता,
जिनराजजी तुम चरणमां, दीन भावथी हो वंदना।
इम सकल सुखकर, दुरित भयहर, विमल लक्षण गुणधरो,
प्रभु अजर, अमर, नरेन्द्रवंदित, विनव्यो सीमंधरो,
निज नादतर्जित, मेघगर्जित, धैर्यनिर्जित मंदरो,
रे भक्तजन हुं चरणसेवक, सीमंधरप्रभु जय करो।
श्री कुंदकुंदप्रभु जय करो।
श्री सदगुरुप्रभु जय करो।

(दोहरो)

पुजुं पद अरहंतना, पूजुं गुरुपद सार;
पूजुं देवी सरस्वती, नित प्रति अष्ट प्रकार।

ॐ ह्रीँ देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्।
ॐ ह्रीँ देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम् ।
ॐ ह्रीँ देवशास्त्रगुरुसमूह! अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(दोहरा)

पूजा प्रकार दोय छे, द्रव्य भाव गुणधाम;
सीचुं भावजळे करी, जन्ममरण क्षयटाम।
अविनाशी अरिहंत तुं, अेक अखंड अमान;
अजर अमर अणजन्म तुं, भयभंजन भगवान।

(हरिगीत)

विमुक्त छुं निवृत्त छुं, हुं सिद्ध छुं ने ब्रह्म छुं,
हुं जन्मने जाणुं नहि, सुखथी भरेलो शिव छुं,

ते आत्म ध्यातो, ज्ञानदर्शनमय, अनन्यमयी खरे;
बस अल्पकाळे कर्मथी प्रविमुक्त आत्माने वरे।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेश्वरचरणकमलपूजनार्थे देवशास्त्रगुरुपूजार्थे जन्मजरामरणविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहरो)

शीतल गुण जेमां रह्यो, शीतळ जिन सुख संग;
चंदन घसी घनसारसुं, पूजीजे मनरंग।
वचनामृत वीतरागनां, परमशांतरसमूळ,
औषध जे भवरोगनां, कायरने प्रतिकूळ।

(त्रोटक)

शुभ शीतळतामय छांय रही, मनवांछित ज्यां फळपंक्ति कही;
जिनभक्ति ग्रहो तरुकल्प अहो, भजीने भगवंत भवंत लहो।

(हरिगीत)

पुण्य-पाप योगथी रोकीने, निज आत्मने आत्मा थकी;
दर्शन अने ज्ञाने ठरी, परद्रव्य इच्छा परिहरी।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेश्वरचरणकमलपूजनार्थे देवशास्त्रगुरुपूजार्थे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहरा)

अक्षत पद लेवा भणी, अक्षतपूजा सार;
अखंडाक्षत जिन पूजीअे, तो लहीअे जयकार।

(धनाश्री)

आलंबन साधन जे त्यागे, परपरिणतिने भागे रे;
अक्षय दर्शन ज्ञान वैरागे, आनंदघन प्रभु जागे रे।

(हरिगीत)

हुं अेक शुद्ध सदा अरूपी, ज्ञानदर्शनमय खरे;
कंई अन्य ते मारुं जरी, परमाणु मात्र नथी अरे।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेश्वरचरणकमलपूजनार्थे देवशास्त्रगुरुपूजार्थे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहरा)

जिनवर हितजनता करी, पूजो भाव अमाप;
पुष्पतणी पूजा रची, काम हरो तत्काळ।
अनंत सौख्य, नाम दुःख, त्यां रही न मित्रता!
अनंत दुःख नाम सौख्य, प्रेम त्यां विचित्रता!
उघाड न्याय नेत्रने निहाळ रे निहाळ तुं,
निवृत्ति शीघ्रमेव धारी ते प्रवृत्ति बाळ तुं।

(हरिगीत)

जीती इन्द्रियो ज्ञानस्वभावे अधिक जाणे आत्मने;
निश्चय विषे स्थित साधुओ भाखे जितेन्द्रिय तेहने।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेश्वर.......... कामबाणविध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहरो)

विविध युक्ति पकवानशुं, लेई चित्त उदार;
अणाहारी पद पामवा, विनवुं वारंवार।

(गझल)

रसे, रूपे अने गंधे, सदा छे भिन्न आ आत्मा,
जराये मोह मायाना, नहीं छे भाव कंई अेमां;
खरुं हुं तत्त्व समजीने, रहुं चेतन तणा रसमां,
चिदानंदी स्वरूप मारुं, निहाळुं आज भीतरमां।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेश्वर.......... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहरो)

जगप्रदीप दीप शुभ, करतां भावो तेह;
ज्ञानशक्तिमां जे रह्युं, प्रगट लहुं निज तेह।
जळहळ ज्योतिस्वरूप तुं, केवळ कृपानिधान;
प्रेम पुनित तुज प्रेरजे, भयभंजन भगवान।

मोह स्वयंभूरमण समुद्र तरी करी,
स्थिति त्यां ज्यां क्षीणमोह गुणस्थान जो;
अंतसमय त्यां पूर्णस्वरूप वीतराग थई,
प्रगटावुं निज केवळज्ञान निधान जो;
अपूर्व अवसर अेवो क्यारे आवशे।

(हरिगीत)

मति, श्रुत, अवधि, मनः केवळ तेह पद अेक ज खरे;
आ ज्ञानपद परमार्थ छे, जे पामी जीव मुक्ति लहे।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेश्वर.......... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहरो)

इणि परे धूपपूजा करी, जिन आगळ शुभभाव,
टाळी विभाव परिणति, दूर करो परभाव।
निराकार निर्लेप छो, निर्मळ ज्ञान निधान,
निर्मोहक नारायणा, भयभंजन भगवान।
चार कर्म घनघाती ते व्यवच्छेद ज्यां,
भवना बीज तणो आत्यंतिक नाश जो;
सर्वभाव ज्ञाता द्रष्टा सह शुद्धता,
कृतकृत्य प्रभु वीर्य अनंत प्रकाश जो;
अपूर्व अवसर अेवो क्यारे आवशे।

(हरिगीत)

जे सर्वसंगविमुक्त ध्यावे आत्मने आत्मा वडे,
नहि कर्म के नोकर्म चेतक चेततो अेकत्वने।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेश्वर..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहरा)

फळपूजा करतां थकां, सफळ करो अवतार;
फळ मागुं प्रभु आगळे, तार, तार मुज तार।

आनंदी अपवर्गी तुं; अकळगति अनुमान;
मोक्षफळ हुं मागतो, भयभंजन भगवान।
अेक परमाणुमात्रनी मळे न स्पर्शता,
पूर्ण कलंक रहित अडोल स्वरूप जो;
शुद्ध निरंजन चैतन्यमूर्ति अनन्यमय,
अगुरुलघु अमूर्त सहज पदरूप जो;
अपूर्व अवसर अेवो क्यारे आवशे।

(हरिगीत)

बंधो तणो जाणी स्वभाव, स्वभाव जाणी आत्मनो,
जे बंधमांही विरक्त थाये, कर्ममोक्ष करे अहो।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेश्वर ....मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहरो)

जळ, चंदन, अक्षत, फूल, दीप, धूप, फळ नैवेद्य,
पूजुं अष्ट समूहथी, भक्तिथी जिनदेव।

(हरिगीत)

जीव चेतनागुण, शब्द-रस-रूप-गंध-व्यक्तिविहीन छे,
निर्दिष्ट नहि संस्थान जीवनुं, ग्रहण लिंगथकी नहीं।
प्रकाश छुं, कृतार्थ छुं, कल्याण छुं ने शांत छुं,
इन्द्रियोथी पार छुं, अगम्य स्वरूप ज्ञान छुं।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरजिनेश्वर ..... अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणधर्मपूजा

(अडिल्ल छंद)

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं;
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दश सार हैं,
चहुं गति दुखतैं काढि मुक्ति करतार हैं।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

हेमाचलकी धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि;
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
अमल अखण्डित सार, तंदुल चन्द्रसमान शुभ। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
फूल अनेक प्रकार, महकैं ऊरधलोक लों। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
नेवज विविध निहार, उत्तम षटरससंगजुग। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बाति कपूर सुधार, दीपकजोति सुहावनी। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फलकी जाति अपार, घ्रान नयन मनमोहने। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों।
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम क्षमाधर्म अर्घ

(सोरठा)

पीडें दुष्ट अनेक, बांध मार बहुविधि करें;
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजे पीतमा।

(चौपाई मिश्रित गीता छंद)

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह भव जस परभव सुखदाई,
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुनको औगुन कहै अयानो।
कहि है अयानो वस्तु छीनै, बांध मार बहुविधि करे,
धरतैं निकारैं तन विदारैं, वैर जो न तहाँ धरैं;
तैं करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा,
अतिक्रोधअगनि बुझाय प्राणी, साम्यजलले सीयरा।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

दशलच्छन वंदौ सदा, मनवांछित फलदाय,
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय। १
उत्तम छिमा जहां मन होई, अंतर बाहर शत्रु न कोई;
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नानाभेद ज्ञान सब भासै। २
उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्याग सुगति उपजावै;
उत्तम सत्यवचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै। ३
उत्तम शौच लोभ परिहारी, संतोषी गुनरतन भंडारी;
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै लै साता। ४

उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करमशत्रुको टालै;
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि–सुरशिव–सुख होई। ५
उत्तम आकिंचनव्रत धारे, परमसमाधिदशा विसतारे,
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुरसहित मुक्तिफल पावै। ६

(दोहा)

करे करमकी निरजरा, भवपींजरा विनाशि;
अजर अमरपदकों लहे, 'द्यानत' सुखकी राशि।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमा मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्माय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवानका अर्घ

पावन जल चंदन, अक्षत पुष्प रु, चरु वर दीपन, धूप धरों;
वर अर्घ उतारो, तुम पद धारो, नंदन तारो, पूज करो।
चरम तीर्थंकर जगत हितंकर, हे अभयंकर, वीर जिनं,
सब कर्म क्षयंकर, दया धुरंधर, जगजन शंकर, शर्म घनं।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवानका अर्घ

आठ विधि सौ अर्घ करिये आठ कर्म जु छीनवे,
मैं करहुं भविजन भगत प्रभुकी 'जसकरण' ओ वीनवै,
श्री शान्तिनाथ जिनेश पूजौं भावसौं मन लायकैं;
शान्त करियौ कर्म सबरे मोक्षलक्ष्मी पायकैं.

ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंद्रप्रभु भगवानका अर्घ

वसुविधि अर्घ बनाय मनोहर श्री जिनमंदिर जावो,
अष्टकर्मके नाश करनको श्री जिनचरन चढावो;

चंचल चितको रोकी, चतुर्गति चक्र भ्रमण निरवारो,
चारु चरण आचरण चतुर नर चंद्रप्रभ चित धारो.

ॐ ह्रीँ श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवानका अर्घ

सलिल सुच्छ मलयागिर चंदन, अछित कुसुम चरु भरि थारी,
मणिदीप दसांग धूप फल उत्तम, अर्घ 'राम' करि सुखकारी;
श्री नेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पसुवनिकी रव सुनिकैं करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी.

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर भगवानका अर्घ

जल गंध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आवने,
धाय चरन चढाय भविजन, मोक्षफलको पावने.
तीर्थपति जिनराजजीकी, परम पावन पूज करो;
श्री सीमंधरनाथकी सौ, भावसे भक्ति लहो।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरनाथजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंदकुंदाचार्यदेवका अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य–मिश्रित, अर्घ कीजे पावना;
कुंदकुंदआदिक ऋद्धिधारक, मुनिनकी पूजा करूं;
ता करें पातिक हरें सारें, सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

श्री भावी तीर्थंकरका अर्घ

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लई दीप धूप फळ अर्घ, जिनवर पूज करुं;

अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीँ धातकीद्वीप–विदेहक्षेत्रस्थ भावि जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति

श्री सुवर्णपुरी तीर्थका अर्घ

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीँ श्री सुवर्णपुरी–अध्यात्मतीर्थे जिनमन्दिरे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, पद्मप्रभ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ आदि जिनेन्द्र; समवसरणे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, तत्पादमूल–विराजमान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव; मानस्तम्भे चतुर्दिक्षु बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी; परमागममन्दिरे बिराजमान भगवान श्री महावीरस्वामी, श्री समयसार आदि पंचपरमागम, श्री कुन्दकुन्दाचार्य–चरणचिह्न; 'गुरुदेवश्रीके वचनामृत' तथा 'बहिनश्रीके वचनामृत' इति उभयाभ्यां विभूषित पंचमेरु-नन्दीश्वरजिनालये बिराजमान भगवान श्री आदिनाथ, धातकीखण्ड विदेही भावी तीर्थंकर, जम्बु–भरतस्य भावी श्री महापद्म जिनवर; पंचमेरौ तथा नन्दीश्वर–द्वापंचाशत्-जिनालये बिराजमान सर्व शाश्वत जिनेन्द्र; जम्बूद्वीप-बाहुबली निर्माणाधीन आयतने विराजमान सर्व कृत्रिम-अकृत्रिम-शाश्वत जिनेन्द्रः, स्वाध्यायमन्दिरे प्रतिष्ठित श्री समयसार–इत्यादि सर्व वीतरागपूज्यपदेभ्यः पूजनार्थे महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधरका अर्घ

(राग-दयानिधि हो)

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुखके दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है;
शांति सुधाकरकी शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर–भगवान, चरण-पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीँ विदेही–भावि श्री देवेन्द्रकीर्तिगणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

श्री बाहुबली भगवानका अर्घ

वसुविधिके वस वसुधा सब की, परवश अति दुःख पावे,
तिहि दुःख दूर करनको भविजन, अर्घ जिनाग्र चढावे।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
तिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी।

ॐ ह्रीँ वर्तमान अवसर्पिणीसमये प्रथम मुक्तिस्थानप्राप्ताय कर्मरिविजये वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबली परमजिनदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति०

श्री सिद्ध भगवानका अर्घ

जल फल वसु वृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा;
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम बन्दा।
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवननामी, अंतरजामी, अभिरामी,
शिवपुरविश्रामी, निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।

ॐ ह्रीँ अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं, सिद्ध पूजूं चाव सों,
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भाव सों।
अर्हंत–भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी,
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा,
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहीं कदा;
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं,
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।
कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजुं सदा,
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा;

चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के,
नामावली इक सहस वसु जय होय प्रति शिवगेह के।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय;
सर्व पूज्य पद पूजहुं, बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीँ भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करवी करावावी–भावना भाववी, श्री अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी–पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग–करणानुयोग–चरणानुयोग–द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि षोडश कारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल विषे, थल विषे, आकाश विषे, गुफा विषे, पहाड विषे, नगर-नगरी विषे, ऊर्ध्वलोक–मध्यलोक–पाताललोक विषे बिराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन–चैत्यालय जिन–बिंबेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र विद्यमान वीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पांच भरत, पांच ऐरावत–दस क्षेत्र संबंधी त्रीस चोवीसीना सातसो वीस जिनेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीपसंबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलास, चंपापुर, पावापुर, गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबिद्री, मूडबिद्री, राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा, सुवर्णपुरी आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण–ऋद्धिधारी सात परमऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

शांतिजिनेश्वर साचो साहेब, शांतिकरण अनुकूलमें हो जिनजी;
तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें, ध्यान धरूं पल पलमें साहेबजी;
तुं. मेरा० १

भवमां भमतां मैं दरिशन पायो, आशा पूरो अेक पलमें हो जिनजी
तुं. मेरा० २

निरमल ज्योत वदन पर सोहे, निकस्यो ज्युं चंद वादळ में जिनजी
तुं. मेरा० ३

मेरो मन तुम साथे लीनो, मीन वसे ज्यु जळमें साहेबजी;
तुं. मेरा० ४
जिन रंग कहे प्रभु शांतिजिनेश्वर, दीठोजी देव सकळमें हो जिनजी.
तुं. मेरा० ५

विसर्जन

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया;
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर ॥१॥
आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं;
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥२॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च;
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर ॥३॥
मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमो गणी;
मंगलं कुंदकुंदार्यो जैनधर्मोऽस्तु मंगलम् ॥४॥
सर्वमंगल मांगल्यं, सर्वकल्याणकारकं;
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम् ॥५॥
(पूजा पूर्ण होनेके बाद नौ बार नमस्कार मंत्रका जाप देना चाहिये)

पंच परमेष्ठीकी आरती

ईह विधि मंगल आरती कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे. टेक
पहली आरती श्रीजिनराजा, भवदधि पार उतार जिहाजा. इह० १
दूसरी आरती सिद्धनकेरी, सुमरन करत मिटे भवफेरी. इह० २
तीजी आरती सूर मुनिंदा, जनम मरन दुःख दूर करिंदा. इह० ३
चौथी आरती श्रीउवज्झाया, दर्शन देखत पाप पलाया. इह० ४
पांचमी आरती साधु तिहारी, कुमति-विनाशन शिव-अधिकारी. इह० ५
छट्ठी आरती श्रीजिनवाणी, 'द्यानत' सुरग मुक्ति सुखदानी. इह० ६

2nd DAY POOJA

आराधना पाठ

(हरिगीत)

मैं देव नित अरहंत चाहूं, सिद्धका सुमिरन करौं;
मैं सूर गुरु मुनि तीनि पद मैं, साधुपद हृदये धरौं;
मैं धर्म करुणामयी चाहूं, जहां हिंसा रंच ना;
मैं शास्त्रज्ञान विराग चाहूं, जासु में परपंच ना ॥१॥
चौबीस श्री जिनदेव चाहूं, और देव न मन बसैं;
जिन बीस क्षेत्र विदेह चाहूं, बंदिते पातिक नशै;
गिरनार शिखर संमेद चाहूं, चम्पापुरी पावापुरी;
कैलास श्री जिनधाम चाहूं, भजत भांजें भ्रमजुरी ॥२॥
नवतत्त्वका सरधान चाहूं, और तत्त्व न मन धरौं;
षटद्रव्य गुण परजाय चाहूं, ठीकतासों भय हरौं;
पूजा परम जिनराज चाहूं, और देव न हूं सदा;
तिहुंकालकी मैं जाप चाहूं, पाप नहि लागै कदा ॥३॥
सम्यक्त्व दरशन ज्ञान चारित्र सदा चाहूं, भावसों;
दशलक्षणी मैं धर्म चाहूं, महा हर्ष उछावसों;
सोलह जु कारण दुःखनिवारण सदा चाहूं, प्रीतिसों;
मैं चित्त अठाई पर्व चाहूं महा मंगल रीतिसों ॥४॥
मैं वेद चारों सदा चाहूं, आदि अंत निवाहसों,
पाओ धरमके चार चाहूं, अधिक चित्त उछाहसों;
मैं दान चारों सदा चाहूं, भुवन वशि लाहो लहूं,
आराधना मैं चारि चाहूं, अन्तमें ये ही गहूं ॥५॥
भावना बारह सदा भाऊं, भाव निरमल होत हैं,
मैं व्रत जु बारह सदा चाहूं, त्याग भाव उद्योत हैं;

प्रतिमा दिगम्बर सदा चाहूं, ध्यान आसन सोहना,
वसुकर्मतैं मैं छुटा चाहूं, शिव लहूं जहुं मोह ना।।६।।
मैं साधुजनको संघ चाहूं, प्रीति तिन ही सों करौ,
मैं पर्वके उपवास चाहूं, अरम्भै मैं परिहरौं;
इस दुःख पंचमकाल माहीं, कुल शरावक मैं लहौं,
अरु महाव्रत धरि सकौं नाहीं निबल तन मैंने गहो।।७।।
आराधना उत्तम सदा चाहूं, सुनो जिनरायजी,
तुम कृपानाथ अनाथ 'द्यानत' दया करना न्यायजी;
वसुकर्मनाश विकाश ज्ञान प्रकाश मोको कीजीअे,
करि सुगतिगमन समाधिमरन सुभक्ति चरनन दीजिअे।।८।।

पूजाकी प्रारंभिक विधि

ॐ जय जय जय, नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोअे सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीँ अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः
(उपर्युक्त पाठ पढ़कर पुष्प यानी(अर्थात्) चंदनमिश्रित चावल थालीमें किये हुए स्वस्तिकके ऊपर चढ़ाना।)

मंगल

चत्ताारि मंगलं—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्ञामि—अरहंते सरणं पव्वज्ञामि, सिद्धे सरणं पव्वज्ञामि, साहू सरणं पव्वज्ञामि, केवलिपण्णत्तो धम्मं सरणं पव्वज्ञामि।
ॐ ह्रीँ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलि चढ़ाना)

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्धकैः;
धवलमंगलगानरवाकुले जिनग्रहे जिननाथमहं यजे।
ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरतीर्थंकराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री कुंदकुंदाचार्यदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीसूर्यकीर्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर-जिनपूजा

(वसंततिलका)

हे देव! पूज्य वर्धमान यहां पधारो,
आह्वानन मैं करत तिष्ठ सुतिष्ठ तारो,
कीनों पवित्र वीरको उपदेश सारो,
पूजों सदा तव पदाब्ज भवाब्धि तारो।
ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।
ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(त्रिभंगी छंद)

अघभेदन दच्छं, शशि सम स्वच्छं, तर्पित अच्छं, नीर भरो,
तसु धारा धारो, तृषा निवारो, कर्म विदारो, पूज करो;

चरम तीर्थंकर जगत हितंकर, हे अभयंकर, वीर जिनं,
सब कर्म क्षयंकर, दया धुरंधर, जगजन शंकर, शर्म घनं।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं०

अघ कर्म निवारण; शीतल कारण; गंधसे पूजन, नित्य करों,
जय अधम उधारण, हे भवतारण, करुणाकारण, अर्ज करों। च०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं नि०

भरि अक्षत थारी, अक्षनहारी, तुम पद धारी, सो अर्चो,
अक्षयपदधारी, भवभवतारी; अति सुखकारी, सो पिरचों। च०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

मदमदन विभंजन, भवभयभंजन, शिववधुरंजन, विश्वयते,
शुभ कमल चढाऊं, कमला पाऊं, अमला ध्याऊं, जगदिदते। च०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

सब मोदन मोदक रसना मोहन, कर्म विमोचन, सद्य करो,
नैवेद्य चढाऊं, पूज रचाऊं, गुणगण गाऊं, पूज करो। च०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०

मिथ्यान्ध निवारा, अति उजियारा, दीपक धारा, पूज करों,
करुं तुम पद आरति, नाशे आरति, भासे भारति, ज्ञान धरों। च०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

बहु धूप अनलमें कर्म जलनमें, लयो शरणमें, चरणनमें,
हे दूरीकृतमद, देहु मोक्षपद, पूजत तुम पद सेवनमें। च०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

बादाम सुश्रीफल, बहु पुंगीफल, ले अनेक फल सों अर्च्यो;
बहु थार भराऊं, तुम यश गाऊं शिवसुख पाऊं सोभर्च्यो। च०

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

पावन जल चंदन, अक्षत पुष्प रु, चरु वर दीपन, धूप धरों;
वर अर्घ उतारो, तुम पद धारो, नंदन तारो, पूज करो।
चरम तीर्थंकर, जगत हितंकर, हे अभयंकर, वीर जिनं,
सब कर्म क्षयंकर, दया धुरंधर, जगजन शंकर, शर्म घनं।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

पंचकल्याणक अर्घ

असित साढतिस छट्ठ लियो तिथि, गरभ धरो प्रभु मात भवानी, (त्रिशलादेवी)
नर हरि देव नमे जिनमाता, हम शिर नावत पावत साता।

ॐ ह्रीँ अषाढशुक्लषष्ठयां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

असित सु चैत जये तेरसको, हरि अभिषेक कियो प्रभुजीको;
कुसुम सु देवनने वरसाये, जय जय शब्द किये हरषाये।

ॐ ह्रीँ चैत्रशुक्लत्रयोदश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

भव तन भोग अनित्य विचारा, इम मन धार तपे तपधारा;
सुर शिबिका धर कानन धाये, धन धन देव अहो धन जाये।

ॐ ह्रीँ मार्गशीर्षकृष्णदशम्यां तपोमंगलप्राप्ताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

असित सु वैशाख ज्ञानसि पायो, सकल चराचर वस्तु लखायो,
पशु नर देव सु पूजन आये, हम ईत मंजुल मंगल गाये।

ॐ ह्रीँ वैशाखशुक्लदशम्यां ज्ञानमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

असित कार्तिक अमावस्या दिन, शिवरमणी वरके सुख पायो;
हरि हरादि जजे पावापुर, जजत जिनेश नशे भवफासा।

ॐ ह्रीँ कार्तिककृष्णामावस्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं०

दशलक्षणधर्मपूजा

(अडिल्ल छंद)

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं;
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दश सार हैं,
चहुं गति दुखतैं काढि मुक्ति करतार हैं।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

हेमाचलकी धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि;
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल अखण्डित सार, तंदुल चन्द्रसमान शुभ। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरघलोक लों। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध निहार, उत्तम षटरससंगजुग। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाति कपूर सुधार, दीपकजोति सुहावनी। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलकी जाति अपार, घ्रान नयन मनमोहने। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों।
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम मार्दवधर्म अर्घ

(सोरठा)

पीडें दुष्ट अनेक, बांध मार बहुविधि करैं;
धरिये छिमा विवेक, कोप न कीजे पीतमा।

(चौपाई मिश्रित गीता छंद)

उत्तम छिमा गहो रे भाई, इह भव जस परभव सुखदाई,
गाली सुनि मन खेद न आनो, गुनको औगुन कहै अयानो।
कहि है अयानो वस्तु छीनै, बांध मार बहुविधि करै,
धरतें निकारैं तन विदारैं, वैर जो न तहाँ धरैं;
तैं करम पूरब किये खोटे, सहै क्यों नहिं जीयरा,
अतिक्रोधअगनि बुझाय प्राणी, साम्यजलले सीयरा।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमाधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

दशलच्छन वंदौ सदा, मनवांछित फलदाय,
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय। १
उत्तम छिमा जहां मन होई, अंतर बाहर शत्रु न कोई;
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नानाभेद ज्ञान सब भासै। २
उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्याग सुगति उपजावै;
उत्तम सत्यवचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै। ३
उत्तम शौच लोभ परिहारी, संतोषी गुनरतन भंडारी;
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै लै साता। ४

उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करमशत्रुको टालै;
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि–सुरशिव–सुख होई। ५
उत्तम आकिंचनव्रत धारे, परमसमाधिदशा विसतारे,
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुरसहित मुक्तिफल पावै। ६

(दोहा)

करे करमकी निरजरा, भवपींजरा विनाशि;
अजर अमरपदकों लहे, 'द्यानत' सुखकी राशि।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमा मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्माय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरुका अर्घ

(गीता छंद)

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूं,
वर धूप निरमल फल विविध बहु जनमके पातक हरूं;
इह भांति अर्घ चढाय नित भवि करत शिव पंकति मचूं,
अरहंत श्रुत–सिद्धांत गुरु–निरग्रंथ नित पूजा रचूं।

(दोहा)

वसुविधि अर्घ संजोयके अति उछाह मन कीन;
जासों पूजों परम पद देव शास्त्र गुरु तीन।

ॐ ह्रीँ देव-शास्त्र-गुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवानका अर्घ

आठ विधि सौ अर्घ करिये आठ कर्म जु छीनवे,
मैं करहुं भविजन भगत प्रभुकी 'जसकरण' अे वीनवै,
श्री शान्तिनाथ जिनेश पूजौं भावसौं मन लायकैं;
शान्त करियौ कर्म सबरे मोक्षलक्ष्मी पायकैं.

ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंद्रप्रभु भगवानका अर्घ

वसुविधि अर्घ बनाय मनोहर श्री जिनमंदिर जावो,
अष्टकर्मके नाश करनको श्री जिनचरन चढावो;
चंचल चितको रोकी, चतुर्गति चक्र भ्रमण निरवारो,
चारु चरण आचरण चतुर नर चंद्रप्रभ चित धारो.

ॐ ह्रीँ श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवानका अर्घ

सलिल सुच्छ मलयागिर चंदन, अछित कुसुम चरु भरि थारी,
मणिदीप दसांग धूप फल उत्तम, अर्घ 'राम' करि सुखकारी;
श्री नेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पसुवनिकी रव सुनिकैं करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी.

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर भगवानका अर्घ

जल गंध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आवने,
धाय चरन चढाय भविजन, मोक्षफलको पावने.
तीर्थपति जिनराजजीकी, परम पावन पूज करो;
श्री सीमंधरनाथकी सौ, भावसे भक्ति लहो।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरनाथजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंदकुंदाचार्यदेवका अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य–मिश्रित, अर्घ कीजे पावना;
कुंदकुंदआदिक ऋद्धिधारक, मुनिनकी पूजा करूं;
ता करें पातिक हरें सारें, सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

श्री भावी तीर्थंकरका अर्घ

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लई दीप धूप फळ अर्घ, जिनवर पूज करुं;
अहो ! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीँ धातकीद्वीप–विदेहक्षेत्रस्थ भावि जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्रासये अर्घं निर्वपामीति

श्री सुवर्णपुरी तीर्थका अर्घ

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले ।

ॐ ह्रीँ श्री सुवर्णपुरी–अध्यात्मतीर्थे जिनमन्दिरे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, पद्मप्रभ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ आदि जिनेन्द्र; समवसरणे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, तत्पादमूल–विराजमान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव; मानस्तम्भे चतुर्दिक्षु बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी; परमागममन्दिरे बिराजमान भगवान श्री महावीरस्वामी, श्री समयसार आदि पंचपरमागम, श्री कुन्दकुन्दाचार्य–चरणचिह्न; 'गुरुदेवश्रीके वचनामृत' तथा 'बहिनश्रीके वचनामृत' इति उभयाभ्यां विभूषित पंचमेरु–नन्दीश्वरजिनालये बिराजमान भगवान श्री आदिनाथ, धातकीखण्ड विदेही भावी तीर्थंकर, जम्बु–भरतस्य भावी श्री महापद्म जिनवर; पंचमेरौ तथा नन्दीश्वर–द्वापंचाशत्-जिनालये बिराजमान सर्व शाश्वत जिनेन्द्र; जम्बूद्वीप-बाहुबली निर्माणाधीन आयतने विराजमान सर्व कृत्रिम-अकृत्रिम-शाश्वत जिनेन्द्रः, स्वाध्यायमन्दिरे प्रतिष्ठित श्री समयसार–इत्यादि सर्व वीतरागपूज्यपदेभ्यः पूजनार्थे महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधरका अर्घ

(राग-दयानिधि हो)

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुखके दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है;

शांति सुधाकरकी शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर–भगवान, चरण-पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीं विदेही–भावि श्री देवेन्द्रकीर्तिगणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्रासये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबली भगवानका अर्घ

वसुविधिके वस वसुधा सब की, परवश अति दुःख पावे,
तिहि दुःख दूर करनको भविजन, अर्घ जिनाग्र चढावे।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
तिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी।

ॐ ह्रीँ वर्तमान अवसर्पिणीसमये प्रथम मुक्तिस्थानप्राप्ताय कर्मरिविजये वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबली परमजिनदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सिद्ध भगवानका अर्घ

जल फल वसु वृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा;
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम बन्दा।
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवननामी, अंतरजामी, अभिरामी,
शिवपुरविश्रामी, निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।

ॐ ह्रीँ अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं, सिद्ध पूजूं चाव सों,
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भाव सों।
अर्हंत–भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी,
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।

सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा,
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहीं कदा;

त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं,
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।

कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजुं सदा,
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा;

चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के,
नामावली इक सहस वसु जय होय प्रति शिवगेह के।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय;
सर्व पूज्य पद पूजहुं, बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीँ भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करवी कराववी–भावना भाववी, श्री अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी–पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग–करणानुयोग–चरणानुयोग–द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडश कारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल विषे, थल विषे, आकाश विषे, गुफा विषे, पहाड विषे, नगर-नगरी विषे, ऊर्ध्वलोक–मध्यलोक–पाताललोक विषे बिराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन–चैत्यालय जिन–बिंबेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र विद्यमान वीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पांच भरत, पांच ऐरावत–दस क्षेत्र संबंधी त्रीस चोवीसीना सातसो वीस जिनेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीपसंबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलास, चंपापुर, पावापुर, गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबिद्री, मूडबिद्री, राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा, सुवर्णपुरी आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण–ऋद्धिधारी सात परमऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(चौपाई)

मैं तुम चरण कमल गुण गाय, बहुविधि भक्ति करूं मन लाय;
जनम जनम प्रभु पाउं तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि। १

कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय;
वार वार मैं विनती करूं, तुम सेये भवसागर तरूं। २

नाम लेत सब दुःख मिट जाय, तुम दर्शन देख्या प्रभु आय;
तुम हो प्रभु देवनके देव, मैं तो करूं चरण तव सेव। ३

मैं आयो पूजनके काज, मेरो जन्म सफल भयो आज;
जो मुझ सेवककी अरदास, सो सब रही ज्ञानमें भास। ४

यातें नहि कुछ कहनी परे, तुमही तें सब कारज सरे;
तुमरे गुणोंको स्वामी अंत न पार, तुम बिन कौन लगावे पार। ५

''तार तार'' विल मत कर देव, अेहि विरद सुन तारन अेव;
पूजा करके नवाउं निज शीश, मुज अपराध क्षमहु जगदीश। ६

विसर्जन

देह छतां जेनी दशा, वर्ते देहातीत;
ते ज्ञानीनां चरणमां, हो वंदन अगणित.

अेह परमपद प्राप्तिनुं कर्युं ध्यान में,
गजा वगर ने हाल मनोरथरूप जो;

तो पण निश्चय राजचंद्र मनने रह्यो,
प्रभु–आज्ञाअे थाशुं ते ज स्वरूप जो;
अपूर्व अवसर अेवो क्यारे आवशे?

(पूजा पूर्ण होनेके बाद नौ बार नमस्कार मंत्रका जाप देना चाहिये)

श्री महावीरजिन आरती

ॐ जय सन्मति देवा, प्रभु जय सन्मति देवा;
वीर महा अति वीर प्रभुजी, वर्धमान देवा. ॐ० १

त्रिशला उर अवतार लियो प्रभु सुरनर हर्षाये;
पंद्रह मास रतन कुंडलपुर, धनपति वर्षाये. ॐ० २

शुक्ल त्रयोदशि चैतमासकी, प्रभु आनंद करतारी;
राय सिद्धारथ घर जन्मोत्सव, ठाठ रचे भारी. ॐ० ३

त्रीस वर्ष लों रहे गृहमें, प्रभु बाल ब्रह्मचारी;
राज त्याग कर भर यौवनमें, मुनिदीक्षा धारी. ॐ० ४

बारह वर्ष किया तप दुद्धर विधि चकचूर किया;
झलके लोकालोक ज्ञानमें, यश भरपूर लिया. ॐ० ५

कार्तिक श्याम अमावस के दिन, जाकर मोक्ष बसे;
पर्व दिवाली चला तभीसे घर-घर दीप जले. ॐ० ६

वीतराग सर्वज्ञ हितैषी, शिवमग परकाशी;
हरिहर ब्रह्मा नाथ तुम्हीं हो, जयजय अविनाशी. ॐ० ७

दीनदयाला जगप्रतिपाला सुरनरनाथ जजे;
सुमरत विघ्न टरे इक छिनमें, पातक दूर भजे. ॐ० ८

चोर भील चान्डाल उबारे, भवदुःख हर तुही;
पतित जान शिवराम उच्चारे, हे जिन शरण गही. ॐ० ९

3rd DAY POOJA

विनयपाठ

(दोहा)

इहि विधि ठाड़ो होयके, प्रथम पढै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥

अनंत चतुष्टयके धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति वधूके कंथ तुम, तीन भुवनके राज॥२॥

तिहुं जगकी पीडा हरण, भवदधिशोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्वके, शिवसुखके करतार॥३॥

हरता अघअंधियारके, करता धर्म प्रकाश।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुणराश॥४॥

धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोजको, नावत तिहुं जगभूप॥५॥

में वंदौं जिनदेवको, कर अति निरमल भाव।
कर्मबंधके छेदने, और न कछु उपाय॥६॥

भविजनको भवकूपतैं, तुम ही काढनहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार॥७॥

चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगतमें भविजनको शिव गैल॥८॥

तुम पद पंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रताको धरै, विष निरविषता थाय॥९॥

चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतें आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥

तुम विन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल विन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेय।
अंजनसे तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥१२।
थकी नाव भवदधि विषे, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जगमें रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेटयौ अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥
कित निगोद, कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजें सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरणके तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिंधुमें, खेओ लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारकैं, कीजे आप समान॥१८॥
तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हाँ, नेक निहार निकार॥१९॥
जो में कहहूं औरसों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तौसों बनी, तातैं करौं पुकार॥२०॥
वंदो पाँचौं परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघन हरन मंगल करन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौवीसौं जिनपद नमों, नमो शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥२२॥

❁

पूजाकी प्रारंभिक विधि

ॐ जय जय जय, नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीँ अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः
(उपर्युक्त पाठ पढ़कर पुष्प यानी(अर्थात्) चंदनमिश्रित चावल थालीमें किये हुए स्वस्तिकके ऊपर चढ़ाना।)

मंगल

चत्तारि मंगलं—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्ञामि—अरहंते सरणं पव्वज्ञामि, सिद्धे सरणं पव्वज्ञामि, साहू सरणं पव्वज्ञामि, केवलिपण्णत्तो धम्मं सरणं पव्वज्ञामि।
ॐ ह्रीँ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलि चढ़ाना)
उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः;
धवलमंगलगानरवाकुले जिनग्रहे जिननाथमहं यजे।
ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरतीर्थंकराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री कुंदकुंदाचार्यदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीसूर्यकीर्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शान्तिनाथ जिनपूजा

(दोहा)

पंच परम गुरु सुमरके, शारद मात मनाय,
शान्तिनाथ जगनाथके अष्टक रचे बनाय।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(हरिगीता)

गंगादि नीरसु हेमझारी जतनसों भर लाइये,
चरणारविंद जिणंद आगे प्रीतिसौं जु चढाइये;
श्री शान्तिनाथ जिनेश पूजौ भावसौं मन लायकैं,
शान्त करियो कर्म सबरे मोक्षलक्ष्मी पायकैं।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

श्रीखंड मलयागिरी चंदन काशमीरी घिस धरौं,
भगवंतजूके जुगल चरणन नित्य अर्चन हौं करौं। श्री शान्ति०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

रायभोग कमोद वासी स्याम जीरक जो लये,
जिनके जु तंदुल करिय उज्ज्वल पुंज प्रभु सन्मुख दये। श्री शान्ति०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

चंपा चमेली कमल केती मुचकुंद पूजौं मालती,
बेला गुलाल गुलाब मरुवो केवरो शुभ सेवती। श्री शान्ति०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पेडा सुफेनी घेवरं विविध भांति मिठाइयाँ,
पकवान नेवज बहुत विध जग भूपकौं अरपाइयाँ। श्री शान्ति०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीप कंचनके करे करपूर बत्ति प्रजालिये,
करत आरति हरत आरत मोह–तिमिर न घालिये।
श्री शान्तिनाथ जिनेश पूजौ भावसौं मन लायकैं,
शान्त करियो कर्म सबरे मोक्षलक्ष्मी पायकैं।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीखंड कृष्ण गोशीर चंदन धूप दस गरभित करी,
तासु लै अंगार उपर दहन कर प्रभु ढिंग धरी। श्री शान्ति०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अेला लवंग सु जायफळ बादाम पुंगी श्रीफले,
भेला नारंगी वरतुलंगी और सुंदर जे भले। श्री शान्ति०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ विधि सौ अर्घ करिये आठ कर्म जु छीनवे,
तुम करहु भविजन भगत प्रभुकी 'जसकरण' अे वीनवै। श्री शान्ति०

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणधर्मपूजा

(अडिल्ल छंद)

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं;
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दश सार हैं,
चहुं गति दुखतैं काढि मुक्ति करतार हैं।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

हेमाचलकी धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि;
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल अखण्डित सार, तंदुल चन्द्रसमान शुभ। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरघलोक लों। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध निहार, उत्तम षटरससंगजुग। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाति कपूर सुधार, दीपकजोति सुहावनी। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलकी जाति अपार, घ्रान नयन मनमोहने। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों।
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आर्जवधर्म अर्घ

कपट न कीजे कोय, चोरनके पुर ना बसै;
सरल सुभावी होय, ताके घर बहु संपदा।

उत्तम आर्जव रीति बखानी, रंचक दगा बहुत दुखदानी;
मनमें हो सो वचन उचरिये, वचन होय सो तनसौं करिये।

करिये सरल तिहुं जोग अपने, देख निरमल आरसी,
मुख करै जैसा लखै तैसा कपटप्रीति अंगारसी;
नहिं लहै लछमी अधिक छलकरि, करमबंध विशेषता,
भय त्यागि दूध बिलाव पीवै, आपदा नहि देखता।

ॐ ह्रीँ उत्तमआर्जवधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

दशलच्छन वंदौ सदा, मनवांछित फलदाय,
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय। १

उत्तम छिमा जहां मन होई, अंतर बाहर शत्रु न कोई;
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नानाभेद ज्ञान सब भासै। २
उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्याग सुगति उपजावै;
उत्तम सत्यवचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै। ३
उत्तम शौच लोभ परिहारी, संतोषी गुनरतन भंडारी;
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै लै साता। ४
उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करमशत्रुको टालै;
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि–सुरशिव–सुख होई। ५
उत्तम आकिंचनव्रत धारे, परमसमाधिदशा विसतारे,
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुरसहित मुक्तिफल पावै। ६

(दोहा)

करे करमकी निरजरा, भवपींजरा विनाशि;
अजर अमरपदकों लहे, 'द्यानत' सुखकी राशि।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमा मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्माय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरुका अर्घ

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूं,
वर धूप निरमल फल विविध बहु जनमके पातक हरूं;
इह भांति अर्घ चढाय नित भवि करत शिव पंकति मचूं,
अरहंत श्रुत–सिद्धांत गुरु–निरग्रंथ नित पूजा रचूं।
वसुविधि अर्घ संजोयके अति उछाह मन कीन;
जासों पूजों परम पद देव शास्त्र गुरु तीन।

ॐ ह्रीं देव-शास्त्र-गुरुभ्य: अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवानका अर्घ

पावन जल चंदन, अक्षत पुष्प रु, चरु वर दीपन, धूप धरों;
वर अर्घ उतारो, तुम पद धारो, नंदन तारो, पूज करो।
चरम तीर्थंकर जगत हितंकर, हे अभयंकर, वीर जिनं,
सब कर्म क्षयंकर, दया धुरंधर, जगजन शंकर, शर्म घनं।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंद्रप्रभु भगवानका अर्घ

वसुविधि अर्घ बनाय मनोहर श्री जिनमंदिर जावो,
अष्टकर्मके नाश करनको श्री जिनचरन चढावो;
चंचल चितको रोकी, चतुर्गति चक्र भ्रमण निरवारो,
चारु चरण आचरण चतुर नर चंद्रप्रभ चित धारो.

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवानका अर्घ

सलिल सुच्छ मलयागिर चंदन, अछित कुसुम चरु भरि थारी,
मणिदीप दसांग धूप फल उत्तम, अर्घ 'राम' करि सुखकारी;
श्री नेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पसुवनिकी रव सुनिकैं करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी.

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर भगवानका अर्घ

जल गंध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आवने,
धाय चरन चढाय भविजन, मोक्षफलको पावने.
तीर्थपति जिनराजजीकी, परम पावन पूज करो;
श्री सीमंधरनाथकी सौ, भावसे भक्ति लहो।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरनाथजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंदकुंदाचार्यदेवका अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य–मिश्रित, अर्घ कीजे पावना;
कुंदकुंदआदिक ऋद्धिधारक, मुनिनकी पूजा करूं;
ता करें पातिक हरें सारें, सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीं श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

श्री भावी तीर्थंकरका अर्घ

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लई दीप धूप फळ अर्घ, जिनवर पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीप–विदेहक्षेत्रस्थ भावि जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्रासये अर्घं निर्वपामीति

श्री सुवर्णपुरी तीर्थंका अर्घ

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरी–अध्यात्मतीर्थे जिनमन्दिरे बिराजमान श्री

सीमन्धरस्वामी, पद्मप्रभ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ आदि जिनेन्द्र; समवसरणे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, तत्पादमूल–विराजमान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव; मानस्तम्भे चतुर्दिक्षु बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी; परमागममन्दिरे बिराजमान भगवान श्री महावीरस्वामी, श्री समयसार आदि पंचपरमागम, श्री कुन्दकुन्दाचार्य–चरणचिह्न; 'गुरुदेवश्रीके वचनामृत' तथा 'बहिनश्रीके वचनामृत' इति उभयाभ्यां विभूषित पंचमेरु-नन्दीश्वरजिनालये बिराजमान भगवान श्री आदिनाथ, धातकीखण्ड विदेही भावी तीर्थंकर, जम्बु–भरतस्य भावी श्री महापद्म जिनवर; पंचमेरौ तथा नन्दीश्वर–द्वापंचाशत्-जिनालये बिराजमान सर्व शाश्वत जिनेन्द्र; जम्बूद्वीप-बाहुबली निर्माणाधीन आयतने विराजमान सर्व कृत्रिम-अकृत्रिम-शाश्वत जिनेन्द्रः, स्वाध्यायमन्दिरे प्रतिष्ठित श्री समयसार–इत्यादि सर्व वीतरागपूज्यपदेभ्यः पूजनार्थे महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधरका अर्घ

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुखके दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है;
शांति सुधाकरकी शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर–भगवान, चरण-पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीं विदेही–भावि श्री देवेन्द्रकीर्तिगणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

श्री बाहुबली भगवानका अर्घ

वसुविधिके वस वसुधा सब की, परवश अति दुःख पावे,
तिहि दुःख दूर करनको भविजन, अर्घ जिनाग्र चढावे।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
तिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी।

ॐ ह्रीँ वर्तमान अवसर्पिणीसमये प्रथम मुक्तिस्थानप्राप्ताय कर्मरिविजये वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबली परमजिनदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति०

श्री सिद्ध भगवानका अर्घ

जल फल वसु वृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा;
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम बन्दा।

त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवननामी, अंतरजामी, अभिरामी,
शिवपुरविश्रामी, निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।

ॐ ह्रीँ अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं, सिद्ध पूजूं चाव सों,
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भाव सों।
अर्हंत–भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी,
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा,
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहीं कदा;
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं,
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।
कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजुं सदा,
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा;
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के,
नामावली इक सहस वसु जय होय प्रति शिवगेह के।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय;
सर्व पूज्य पद पूजहुं, बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीँ भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करवी कराववी–भावना भाववी, श्री अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी–पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग–करणानुयोग–चरणानुयोग–द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि षोडश कारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः।

सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल विषे, थल विषे, आकाश विषे, गुफा विषे, पहाड विषे, नगर-नगरी विषे, ऊर्ध्वलोक-मध्यलोक-पाताललोक विषे बिराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन-चैत्यालय जिन-बिंबेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र विद्यमान वीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पांच भरत, पांच ऐरावत-दस क्षेत्र संबंधी त्रीस चोवीसीना सातसो वीस जिनेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीपसंबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलास, चंपापुर, पावापुर, गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबिद्री, मूडबिद्री, राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा, सुवर्णपुरी आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण-ऋद्धिधारी सात परमऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(शान्तिपाठ बोलते वक्त दोंनों हाथोंसे पुष्पवृष्टि करना)

(चोपाई १६ मात्रा)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शीलगुणव्रतसंयमधारी;
लखन अेक सौ आठ विराजै, निरखत नयन कमलदल लाजै।

पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी;
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमों शांतिहित शांति विधायक।

दिव्य विटप पहुपनकी वरषा, दुन्दुभी आसन वाणी सरसा;
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।

शांति जिनेश शांति सुखदाइ, जगतपूज्य पूजौं शिर नाइ;
परम शांति दीजैं हम सबको, पढैं तिन्हें पुनि चार संघको।

(वसंततिलका)

पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके;
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप।

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज;
शांति करो सब जगतमें, वृषभादिक जिनराज।

विसर्जन

(दोहा)

बिन जाने वा जानके, रही टूट जो कोय;
तुम प्रसाद तैं परमगुरु, सो सब पूरन होय।

पूजनविधि जानों नहीं, नहिं जानों आह्वान;
और विसर्जन हू नहीं, क्षमा करो भगवान।

मंत्रहीन धनहीन हुं, क्रियाहीन जिनदेव;
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरणकी सेव।

आये जो जो देवगन, पूजे भक्ति प्रमान;
अपने स्थान बिराजहु, कृपा करो भगवान।

॥ इत्याशीर्वादः ॥

(पूजा पूर्ण होनेके बाद नौ बार नमस्कार मंत्रका जाप देना चाहिये)

श्री शांतिजिनकी आरती

जय जय आरती शांति तुमारी, चरणकमलकी मैं जाउं बलिहारी. १

विश्वसेन अचिराजीको नंदा, शांतिनाथ मुख पूनम चंदा. जय० २

चालीस धनुष्य सोवनमय काया, मृगलंछन प्रभुचरण सुहाया. जय० ३

चक्रवर्ती प्रभु पांचमा सोहे, सोळमा जिनवर जग सहु मोहे. जय० ४

मंगळ आरती तोरी कीजे, जन्मजन्मनो लाहो लीजे. जय० ५

कर जोडी सेवक गुण गावे, सो नरनारि अमर पद पावे. जय० ६

4th DAY POOJA

आराधना पाठ

(हरिगीत)

मैं देव नित अरहंत चाहूं, सिद्धका सुमिरन करौं;
मैं सूर गुरु मुनि तीनि पद मैं, साधुपद हृदये धरौं;
मैं धर्म करुणामयी चाहूं, जहां हिंसा रंच ना;
मैं शास्त्रज्ञान विराग चाहूं, जासु में परपंच ना।।१।।
चौबीस श्री जिनदेव चाहूं, और देव न मन बसैं;
जिन बीस क्षेत्र विदेह चाहूं, बंदिते पातिक नशैं;
गिरनार शिखर संमेद चाहूं, चम्पापुरी पावापुरी;
कैलास श्री जिनधाम चाहूं, भजत भांजें भ्रमजुरी।।२।।
नवतत्त्वका सरधान चाहूं, और तत्त्व न मन धरौं;
षटद्रव्य गुण परजाय चाहूं, ठीकतासों भय हरौं;
पूजा परम जिनराज चाहूं, और देव न हूं सदा;
तिहुंकालकी मैं जाप चाहूं, पाप नहि लागै कदा।।३।।
सम्यक्त्व दरशन ज्ञान चारित्र सदा चाहूं, भावसों;
दशलक्षणी मैं धर्म चाहूं, महा हर्ष उछावसों;
सोलह जु कारण दुःखनिवारण सदा चाहूं, प्रीतिसों;
मैं चित्त अठाई पर्व चाहूं महा मंगल रीतिसों।।४।।
मैं वेद चारों सदा चाहूं, आदि अंत निवाहसों,
पाऐ धरमके चार चाहूं, अधिक चित्त उछाहसों;
मैं दान चारों सदा चाहूं, भुवन वशि लाहो लहूं,
आराधना मैं चारि चाहूं, अन्तमें ये ही गहूं।।५।।
भावना बारह सदा भाऊं, भाव निरमल होत हैं,
मैं व्रत जु बारह सदा चाहूं, त्याग भाव उद्योत हैं;

प्रतिमा दिगम्बर सदा चाहूं, ध्यान आसन सोहना,
वसुकर्मतैं मैं छुटा चाहूं, शिव लहूं जहुं मोह ना।।६।।
मैं साधुजनको संघ चाहूं, प्रीति तिन ही सों करौ,
मैं पर्वके उपवास चाहूं, अरम्भै मैं परिहरौं;
इस दुःख पंचमकाल माहीं, कुल शरावक मैं लहौं,
अरु महाव्रत धरि सकौं नाहीं निबल तन मैंने गहो।।७।।
आराधना उत्तम सदा चाहूं, सुनो जिनरायजी,
तुम कृपानाथ अनाथ 'द्यानत' दया करना न्यायजी;
वसुकर्मनाश विकाश ज्ञान प्रकाश मोको कीजीऐ,
करि सुगतिगमन समाधिमरन सुभक्ति चरनन दीजिऐ।।८।।

पूजाकी प्रारंभिक विधि

ॐ जय जय जय, नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोऐ सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीँ अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः
(उपर्युक्त पाठ पढ़कर पुष्प यानी(अर्थात्) चंदनमिश्रित चावल थालीमें किये हुए स्वस्तिकके ऊपर चढ़ाना।)

मंगल

चत्तारि मंगलं—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्ञामि—अरहंते सरणं पव्वज्ञामि, सिद्धे सरणं पव्वज्ञामि, साहू सरणं पव्वज्ञामि, केवलिपण्णत्तो धम्मं सरणं पव्वज्ञामि।
ॐ ह्रीँ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलि चढ़ाना)

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः;
धवलमंगलगानरवाकुले जिनग्रहे जिननाथमहं यजे।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरतीर्थंकराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री कुंदकुंदाचार्यदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीसूर्यकीर्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ-जिनपूजा

चारित चंद्र चतुष्टय मंडित चारि प्रचंड अरी चकचूरे,
चंद्र विराजत चर्णविषै यह चंद्रप्रभासम हैं गुणपूरे।
चारु चरित चकोरनके चित चोरन चंद्रकला बहु सूरे,
सो प्रभु चंद्र समंत गुरुर्चित चिंतत ही सुख होय हजूरे।

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्, इत्याह्वाननम्।
ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(चाल जोगीरासा)

पद्मद्रह सम उज्ज्वल जल ले शीतलता अधिकाइ,
जन्म जरा दुःख दूर करनको, जिनवर पूज रचाइ;
चंचल चितको रोकि चतुर्गति चक्र भ्रमण निरवारो,
चारु चरण आचरण चतुर नर चंद्रप्रभू चित धारो।

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर वर बावन चंदन केसरि संग घसाओ;
भव आताप निवारन कारन श्री जिनचरण चढाओ।
चंचल चितको रोकि चतुर्गति चक्र भ्रमण निरवारो,
चारु चरण आचरण चतुर नर चंद्रप्रभू चित धारो।

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

चंद्र किरन सम श्वेत मनोहर खंड विवर्जित सोहे,
अैसे अक्षतसों प्रभु पूजों जगजीवन मन मोहे। चंचल०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु के शुचि पुष्प मनोहर वरन वरनके लावो,
कामदाह निरवारन कारण श्री जिनचरण चढावो। चंचल०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविधिके व्यंजन ताजे स्वच्छ अदोष बनावो,
रोग क्षुधा दुःख दूर करनको श्रीजिनचरण चढावो। चंचल०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनक रतनमय दीप मनोहर उज्ज्वल ज्योति जगावो,
मोह महातम नाश करनको, जिनवर चरण चढावो। चंचल०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दसविधि धूप हुतासनमांही खेय सुगंध बढावो,
अष्टकर्मके नाश करनको श्री जिनचरण चढावो। चंचल०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविधिके उत्तम फल लै तनमनको सुखदाइ,
दुःख निवारन शिवफल कारन पूजें श्री जिनराइ। चंचल०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसुविधि अर्घ बनाय मनोहर श्रीजिनमंदिर जावो,
अष्टकर्मके नाश करनको श्री जिनचरन चढावो। चंचल०

ॐ ह्रीँ श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणधर्मपूजा

(अडिल्ल छंद)

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं;
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दश सार हैं,
चहुं गति दुखतैं काढि मुक्ति करतार हैं।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

हेमाचलकी धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि;
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल अखण्डित सार, तंदुल चन्द्रसमान शुभ। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल अनेक प्रकार, महकैं ऊरधलोक लों। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध निहार, उत्तम षटरससंगजुग। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाति कपूर सुधार, दीपकजोति सुहावनी। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलकी जाति अपार, घ्रान नयन मनमोहने। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों।
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम सत्यधर्म अर्घ

कठिन वचन मति बोल, परनिन्दा अरु झूठ तज;
सांच जवाहर खोल, सतवादी जगमें सुखी।

उत्तम सत्यवरत पा लीजे, परविश्वासघात नहीं कीजे;
सांचे झूठे मानुष देखो, आपन पूत स्वपास न पेखो।

पेखो तिहायत पुरुष सांचेको, दरब सब दीजिये,
मुनिराज श्रावककी प्रतिष्ठा, सांच गुन लख लीजिये;
ऊंचे सिंहासन बैठि वसुनृप, धरमका भूपति भया,
वच झूठसेती नरक पहुंचा, सुरगमें नारद गया।

ॐ ह्रीँ उत्तमसत्यधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

दशलच्छन वंदौ सदा, मनवांछित फलदाय,
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय। १

उत्तम छिमा जहां मन होई, अंतर बाहर शत्रु न कोई;
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नानाभेद ज्ञान सब भासै। २

उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्याग सुगति उपजावै;
उत्तम सत्यवचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै। ३

उत्तम शौच लोभ परिहारी, संतोषी गुनरतन भंडारी;
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै लै साता। ४

उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करमशत्रुको टालै;
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि–सुरशिव–सुख होई। ५
उत्तम आकिंचनव्रत धारे, परमसमाधिदशा विसतारे,
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुरसहित मुक्तिफल पावै। ६

(दोहा)

करे करमकी निरजरा, भवपींजरा विनाशि;
अजर अमरपदकों लहे, 'द्यानत' सुखकी राशि।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमा मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्माय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरुका अर्घ

(गीता छंद)

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूं,
वर धूप निरमल फल विविध बहु जनमके पातक हरूं;
इह भांति अर्घ चढाय नित भवि करत शिव पंकति मचूं,
अरहंत श्रुत–सिद्धांत गुरु–निरग्रंथ नित पूजा रचूं।

(दोहा)

वसुविधि अर्घ संजोयके अति उछाह मन कीन;
जासों पूजों परम पद देव शास्त्र गुरु तीन।

ॐ ह्रीँ देव-शास्त्र-गुरुभ्य: अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवानका अर्घ

पावन जल चंदन, अक्षत पुष्प रु, चरु वर दीपन, धूप धरों;
वर अर्घ उतारो, तुम पद धारो, नंदन तारो, पूज करो।
चरम तीर्थंकर जगत हितंकर, हे अभयंकर, वीर जिनं,
सब कर्म क्षयंकर, दया धुरंधर, जगजन शंकर, शर्म घनं।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवानका अर्घ

आठ विधि सौ अर्घ करिये आठ कर्म जु छीनवे,
मैं करहुं भविजन भगत प्रभुकी 'जसकरण' अे वीनवे,
श्री शान्तिनाथ जिनेश पूजौं भावसौं मन लायकैं;
शान्त करियौ कर्म सबरे मोक्षलक्ष्मी पायकैं.

ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवानका अर्घ

सलिल सुच्छ मलयागिर चंदन, अछित कुसुम चरु भरि थारी,
मणिदीप दसांग धूप फल उत्तम, अर्घ 'राम' करि सुखकारी;
श्री नेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पसुवनिकी रव सुनिकें करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी.

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर भगवानका अर्घ

जल गंध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आवने,
धाय चरन चढाय भविजन, मोक्षफलको पावने.
तीर्थपति जिनराजजीकी, परम पावन पूज करो;
श्री सीमंधरनाथकी सौ, भावसे भक्ति लहो।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरनाथजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंदकुंदाचार्यदेवका अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य–मिश्रित, अर्घ कीजे पावना;
कुंदकुंदआदिक ऋद्धिधारक, मुनिनकी पूजा करूं;
ता करें पातिक हरें सारें, सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

श्री भावी तीर्थंकरका अर्घ

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लई दीप धूप फळ अर्घ, जिनवर पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीँ धातकीद्वीप–विदेहक्षेत्रस्थ भावि जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति

श्री सुवर्णपुरी तीर्थंका अर्घ

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीँ श्री सुवर्णपुरी–अध्यात्मतीर्थे जिनमन्दिरे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, पद्मप्रभ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ आदि जिनेन्द्र; समवसरणे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, तत्पादमूल–विराजमान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव; मानस्तम्भे चतुर्दिक्षु बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी; परमागममन्दिरे बिराजमान भगवान श्री महावीरस्वामी, श्री समयसार आदि पंचपरमागम, श्री कुन्दकुन्दाचार्य–चरणचिह्न; 'गुरुदेवश्रीके वचनामृत' तथा 'बहिनश्रीके वचनामृत' इति उभयाभ्यां विभूषित पंचमेरु-नन्दीश्वरजिनालये बिराजमान भगवान श्री आदिनाथ, धातकीखण्ड विदेही भावी तीर्थंकर, जम्बु–भरतस्य भावी श्री महापद्म जिनवर; पंचमेरौ तथा नन्दीश्वर–द्वापंचाशत्-जिनालये बिराजमान सर्व शाश्वत जिनेन्द्र; जम्बूद्वीप-बाहुबली निर्माणाधीन आयतने विराजमान सर्व कृत्रिम-अकृत्रिम-शाश्वत जिनेन्द्रः, स्वाध्यायमन्दिरे प्रतिष्ठित श्री समयसार–इत्यादि सर्व वीतरागपूज्यपदेभ्यः पूजनार्थे महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधरका अर्घ

(राग-दयानिधि हो)

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुखके दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है;

शांति सुधाकरकी शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर–भगवान, चरण-पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीं विदेही–भावि श्री देवेन्द्रकीर्तिगणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति

श्री बाहुबली भगवानका अर्घ

वसुविधिके वस वसुधा सब की, परवश अति दुःख पावे,
तिहि दुःख दूर करनको भविजन, अर्घ जिनाग्र चढावे।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
तिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी।

ॐ ह्रीँ वर्तमान अवसर्पिणीसमये प्रथम मुक्तिस्थानप्राप्ताय कर्मरिविजये वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबली परमजिनदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति.

श्री सिद्ध भगवानका अर्घ

जल फल वसु वृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा;
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम बन्दा।
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवननामी, अंतरजामी, अभिरामी,
शिवपुरविश्रामी, निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।

ॐ ह्रीँ अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं, सिद्ध पूजूं चाव सों,
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भाव सों।
अर्हंत–भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी,
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा,
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहीं कदा;
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं,
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।

कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजुं सदा,
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा;
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के,
नामावली इक सहस वसु जय होय प्रति शिवगेह के।

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय;
सर्व पूज्य पद पूजहुं, बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीँ भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करवी कराववी–भावना भाववी, श्री अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी–पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग–करणानुयोग–चरणानुयोग–द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि षोडश कारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल विषे, थल विषे, आकाश विषे, गुफा विषे, पहाड विषे, नगर-नगरी विषे, ऊर्ध्वलोक–मध्यलोक–पाताललोक विषे बिराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन–चैत्यालय जिन–बिंबेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र विद्यमान वीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पांच भरत, पांच अैरावत–दस क्षेत्र संबंधी त्रीस चोवीसीना सातसो वीस जिनेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीपसंबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलास, चंपापुर, पावापुर, गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबिद्री, मूडबिद्री, राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा, सुवर्णपुरी आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण–ऋद्धिधारी सात परमऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

शांतिजिनेश्वर साचो साहेब, शांतिकरण अनुकूलमें हो जिनजी;
तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें, ध्यान धरूं पल पलमें साहेबजी;
तुं. मेरा० १
भवमां भमतां मैं दरिशन पायो, आशा पूरो अेक पलमें हो जिनजी
तुं. मेरा० २

निरमल ज्योत वदन पर सोहे, निकस्यो ज्युं चंद वादळ में जिनजी
तुं. मेरा० ३
मेरो मन तुम साथे लीनो, मीन वसे ज्यु जळमें साहेबजी;
तुं. मेरा० ४
जिन रंग कहे प्रभु शांतिजिनेश्वर, दीठोजी देव सकळमें हो जिनजी.
तुं. मेरा० ५

विसर्जन

परमेश्वर परमात्मा, पावन तू परमिट्ठ;
जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिट्ठ। १
अचल अकल अविकार सार, करुणारस सिंधु;
जगति जन आधार अेक, निष्कारण बंधु। २
गुण अनंत प्रभु ताहरा अे, किमही कळ्या न जाय;
भक्ति धरुं जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय। ३
(पूजा पूर्ण होनेके बाद नौ बार नमस्कार मंत्रका जाप देना चाहिये)

श्री चंद्रप्रभु जिन आरती

धन्य धन्य आज घडी कैसी सुखकार है,
चंद्रप्रभु दरबार लगा सीमंधर दरबार है.
खुशियां अपार आज हर दिलपे छांई हैं,
दर्शनके हेतु सब जनता अकुलाई है, जनता अकुलाई हैं,
चारों ओर देखलो भीड बेसुमार है. चंद्रप्रभु०१
भक्तिसे नृत्य–गान कोई हैं कर रहे,
आतम सुबोध कर पापोंसे डर रहे, पापोंसे डर रहे;
पल पल पुण्यका भरे भंडार है. चंद्रप्रभु०२
जय जयके नादसे गुंजा आकाश है,
छूटेंगे पाप सब निश्चय ये आश है, निश्चय ये आश है;
देखलो 'सौभाग्य' खुला आज मुक्तिद्वार है. चंद्रप्रभु०३

5th DAY POOJA

विनयपाठ

(दोहा)

इहि विधि ठाड़ो होयके, प्रथम पढै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।१।।

अनंत चतुष्टयके धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति वधूके कंथ तुम, तीन भुवनके राज।।२।।

तिहुं जगकी पीडा हरण, भवदधिशोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्वके, शिवसुखके करतार।।३।।

हरता अघअंधियारके, करता धर्म प्रकाश।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुणराश।।४।।

धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोजको, नावत तिहुं जगभूप।।५।।

में वंदौं जिनदेवको, कर अति निरमल भाव।
कर्मबंधके छेदने, और न कछु उपाय।।६।।

भविजनको भवकूपतैं, तुम ही काढनहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार।।७।।

चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगतमें भविजनको शिव गैल।।८।।

तुम पद पंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रताको धरै, विष निरविषता थाय।।९।।

चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतें आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप।।१०।।

तुम विन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल विन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।।११।।

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेय।
अंजनसे तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव।।१२।।

थकी नाव भवदधि विषे, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव।।१३।।

राग सहित जगमें रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेटयौ अबै, मेटो राग कुटेव।।१४।।

कित निगोद, कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान।।१५।।

तुमको पूजें सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव।।१६।।

अशरणके तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिंधुमें, खेओ लगाओ पार।।१७।।

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारकैं, कीजे आप समान।।१८।।

तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हाँ, नेक निहार निकार।।१९।।

जो में कहहूं औरसों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तौसों बनी, तातैं करौं पुकार।।२०।।

वंदो पाँचौं परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघन हरन मंगल करन, पूरन परम प्रकाश।।२१।।

चौवीसौं जिनपद नमों, नमो शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय।।२२।।

❀

पूजाकी प्रारंभिक विधि

ॐ जय जय जय, नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः

(उपर्युक्त पाठ पढ़कर पुष्प यानी(अर्थात्) चंदनमिश्रित चावल थालीमें किये हुए स्वस्तिकके ऊपर चढ़ाना।)

मंगल

चत्तारि मंगलं—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ ह्रीं नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलि चढ़ाना)

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः;

धवलमंगलगानरवाकुले जिनग्रहे जिननाथमहं यजे।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरतीर्थंकराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री कुंदकुंदाचार्यदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीसूर्यकीर्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ-जिनपूजा

(जोगीरासा)

श्री हरिवंश उजागर नागर नेमीश्वर जिनराई,
बालब्रह्मचारी जगतारी श्याम शरीर सुहाई;
जादववंश महानभ पूरन चंद्रकला सुखदाई,
अत्र विराज हरो दुख हमरो शिवसुख द्यो जिनराई।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः! स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्!

(गीता छंद)

पद्मद्रहको नीर मनोहर कंचन झारी मांहि धरों,
जनम जरा दुःख दूर करनको, श्री जिन सन्मुख धार करों;
बालब्रह्मचारी जगतारी नेमिश्वर जिनराज महान,
मैं नित ध्यान धरूं प्रभु तेरा, मोकुं दीजो अविचल थान।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

मलयागिर करपूर मिलाया केशर रंग अनूपम जान,
भव आताप रहित जिनवरके चरनकमलको पूजे आन। बाल०

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चंदनं नि०

चंद किरनसम उज्ज्वल लीजै, अक्षत स्वच्छ सरल गुणखान;
अक्षयपदके नायक प्रभुको, पूजें हर्ष सहित हित मान। बाल०

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

वरन वरनके कुसुम मंगावैं, कुसुमायुध अरि जीतन काज;
कुसुमायुध विजयी जिनवरके, चरनकमलको पूजें आज। बाल०

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

मनमोहन पकवान बनावो, हरष सहित प्रभुके गुण गाय;
क्षुधा रोगके नाश करनको, श्री जिन चरनन देत चढाय।
बालब्रह्मचारी जगतारी नेमीश्वर जिनराज महान,
मैं नित ध्यान धरूं प्रभु तेरा, मोकूं दीजो अविचल थान।
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि०
मणिमय दीप अमोलक लेके, रतन रकेबीमें धर लाय;
मोह महातम नासक प्रभुके, चरणाम्बुजमें देत चढाय। बाल०
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०
कृष्णागर करपूर मिलाकर, धूप सुगंध मनोहर आन;
कर्मकलंक निवारक प्रभुके, चरमकमल ते पूजौं आन। बाल०
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०
श्रीफल लोंग सुपारी पिस्ता, अेला केला आदि महान;
मुक्ति श्रीफलदायक प्रभुके, चरणाम्बुज पूजै गुणखान। बाल०
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०
जल फल द्रव्य मिलाय गाय गुन, रतनथार भरिये सुखदान,
अष्टकर्मके नासक प्रभुको, पूजौं निज गुणदायक जान। बाल०
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

दशलक्षणधर्मपूजा

(अडिल्ल छंद)

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं;
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दश सार हैं,
चहुं गति दुखतैं काढि मुक्ति करतार हैं।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

हेमाचलकी धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि;
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
अमल अखण्डित सार, तंदुल चन्द्रसमान शुभ। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
फूल अनेक प्रकार, महकैं ऊरघलोक लों। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
नेवज विविध निहार, उत्तम षटरससंगजुग। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बाति कपूर सुधार, दीपकजोति सुहावनी। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फलकी जाति अपार, घ्रान नयन मनमोहने। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों।
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम शौचधर्म अर्घ

धरि हिरदै संतोष, करहु तपस्या देहसौं,
शौच सदा निरदोष, धरम बडो संसारमें।

उत्तम शौच सर्व जग जाना, लोभ पापको बाप बखाना;
आशा–पास महा दुखदानी, सुख पावै सन्तोषी प्रानी।

प्रानी सदा शुचि शील जप तप, ज्ञानध्यानप्रभावतैं,
नित गंगजमुन समुद्र न्हाये, अशुचि दोष सुभावतैं;
उपर अमल मल भर्यो भीतर, कौन विध घट शुचि कहै;
बहु देह मैली सुगुन थैली, शौचगुन साधु लहै।

ॐ ह्रीँ उत्तमशौचधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

दशलच्छन वंदौ सदा, मनवांछित फलदाय,
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय। १
उत्तम छिमा जहां मन होई, अंतर बाहर शत्रु न कोई;
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नानाभेद ज्ञान सब भासै। २
उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्याग सुगति उपजावै;
उत्तम सत्यवचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै। ३
उत्तम शौच लोभ परिहारी, संतोषी गुनरतन भंडारी;
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै लै साता। ४
उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करमशत्रुको टालै;
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि–सुरशिव–सुख होई। ५
उत्तम आकिंचनव्रत धारे, परमसमाधिदशा विसतारे,
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुरसहित मुक्तिफल पावै। ६

(दोहा)

करे करमकी निरजरा, भवपींजरा विनाशि;
अजर अमरपदकों लहे, 'द्यानत' सुखकी राशि।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमा मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्माय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरुका अर्घ

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूं,
वर धूप निरमल फल विविध बहु जनमके पातक हरूं;
इह भांति अर्घ चढाय नित भवि करत शिव पंकति मचूं,
अरहंत श्रुत–सिद्धांत गुरु–निरग्रंथ नित पूजा रचूं।
वसुविधि अर्घ संजोयके अति उछाह मन कीन;
जासों पूजों परम पद देव शास्त्र गुरु तीन।

ॐ ह्रीँ देव-शास्त्र-गुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवानका अर्घ

पावन जल चंदन, अक्षत पुष्प रु, चरु वर दीपन, धूप धरों;
वर अर्घ उतारो, तुम पद धारो, नंदन तारो, पूज करो।
चरम तीर्थंकर जगत हितंकर, हे अभयंकर, वीर जिनं,
सब कर्म क्षयंकर, दया धुरंधर, जगजन शंकर, शर्म घनं।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवानका अर्घ

आठ विधि सौ अर्घ करिये आठ कर्म जु छीनवे,
मैं करहुं भविजन भगत प्रभुकी 'जसकरण' अे वीनवै,
श्री शान्तिनाथ जिनेश पूजौं भावसौं मन लायकैं;
शान्त करियौ कर्म सबरे मोक्षलक्ष्मी पायकैं.

ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंद्रप्रभु भगवानका अर्घ

वसुविधि अर्घ बनाय मनोहर श्री जिनमंदिर जावो,
अष्टकर्मके नाश करनको श्री जिनचरन चढावो;
चंचल चितको रोकी, चतुर्गति चक्र भ्रमण निरवारो,
चारु चरण आचरण चतुर नर चंद्रप्रभ चित धारो.

ॐ ह्रीँ श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर भगवानका अर्घ

जल गंध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आवने,
धाय चरन चढाय भविजन, मोक्षफलको पावने.
तीर्थपति जिनराजजीकी, परम पावन पूज करो;
श्री सीमंधरनाथकी सौ, भावसे भक्ति लहो।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरनाथजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंदकुंदाचार्यदेवका अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य–मिश्रित, अर्घ कीजे पावना;
कुंदकुंदआदिक ऋद्धिधारक, मुनिनकी पूजा करूं;
ता करें पातिक हरें सारें, सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

श्री भावी तीर्थंकरका अर्घ

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लई दीप धूप फळ अर्घ, जिनवर पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीँ धातकीद्वीप–विदेहक्षेत्रस्थ भावि जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति

श्री सुवर्णपुरी तीर्थका अर्घ

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीँ श्री सुवर्णपुरी–अध्यात्मतीर्थे जिनमन्दिरे बिराजमान श्री

सीमन्धरस्वामी, पद्मप्रभ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ आदि जिनेन्द्र; समवसरणे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, तत्पादमूल–विराजमान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव; मानस्तम्भे चतुर्दिक्षु बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी; परमागममन्दिरे बिराजमान भगवान श्री महावीरस्वामी, श्री समयसार आदि पंचपरमागम, श्री कुन्दकुन्दाचार्य–चरणचिह्न; 'गुरुदेवश्रीके वचनामृत' तथा 'बहिनश्रीके वचनामृत' इति उभयाभ्यां विभूषित पंचमेरु–नन्दीश्वरजिनालये बिराजमान भगवान श्री आदिनाथ, धातकीखण्ड विदेही भावी तीर्थंकर, जम्बु–भरतस्य भावी श्री महापद्म जिनवर; पंचमेरौ तथा नन्दीश्वर–द्वापंचाशत्-जिनालये बिराजमान सर्व शाश्वत जिनेन्द्र; जम्बूद्वीप-बाहुबली निर्माणाधीन आयतने विराजमान सर्व कृत्रिम-अकृत्रिम-शाश्वत जिनेन्द्रः, स्वाध्यायमन्दिरे प्रतिष्ठित श्री समयसार–इत्यादि सर्व वीतरागपूज्यपदेभ्यः पूजनार्थे महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधरका अर्घ

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुखके दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है;
शांति सुधाकरकी शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर–भगवान, चरण-पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीं विदेही–भावि श्री देवेन्द्रकीर्तिगणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

श्री बाहुबली भगवानका अर्घ

वसुविधिके वस वसुधा सब की, परवश अति दुःख पावे,
तिहि दुःख दूर करनको भविजन, अर्घ जिनाग्र चढावे।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
तिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी।

ॐ ह्रीँ वर्तमान अवसर्पिणीसमये प्रथम मुक्तिस्थानप्राप्ताय कर्मरिविजये वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबली परमजिनदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति०

श्री सिद्ध भगवानका अर्घ

जल फल वसु वृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा;
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम बन्दा।

त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवननामी, अंतरजामी, अभिरामी,
शिवपुरविश्रामी, निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।

ॐ ह्रीं अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं, सिद्ध पूजूं चाव सों,
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भाव सों।
अर्हंत-भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी,
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा,
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहीं कदा;
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं,
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।
कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजुं सदा,
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा;
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के,
नामावली इक सहस वसु जय होय प्रति शिवगेह के।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय;
सर्व पूज्य पद पूजहुं, बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीं भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करवी कराववी-भावना भाववी, श्री अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडश कारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्‌चारित्रेभ्यो नमः। जल विषे, थल विषे, आकाश विषे, गुफा विषे, पहाड विषे, नगर-नगरी विषे, ऊर्ध्वलोक-मध्यलोक-पाताललोक विषे बिराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन-चैत्यालय जिन-बिंबेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र विद्यमान वीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पांच भरत, पांच अैरावत-दस क्षेत्र संबंधी त्रीस चोवीसीना सातसो वीस जिनेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीपसंबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलास, चंपापुर, पावापुर, गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबिद्री, मूडबिद्री, राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा, सुवर्णपुरी आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण-ऋद्धिधारी सात परमऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(चौपाई)

मैं तुम चरण कमल गुण गाय, बहुविधि भक्ति करूं मन लाय;
जनम जनम प्रभु पाउं तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि। १

कृपा तिहारी अैसी होय, जामन मरन मिटावो मोय;
वार वार मैं विनती करूं, तुम सेये भवसागर तरूं। २

नाम लेत सब दुःख मिट जाय, तुम दर्शन देख्या प्रभु आय;
तुम हो प्रभु देवनके देव, मैं तो करूं चरण तव सेव। ३

मैं आयो पूजनके काज, मेरो जन्म सफल भयो आज;
जो मुझ सेवककी अरदास, सो सब रही ज्ञानमें भास। ४

यातें नहि कुछ कहनी परे, तुमही तें सब कारज सरे;
तुमरे गुणोंको स्वामी अंत न पार, तुम बिन कौन लगावे पार। ५

''तार तार'' विल मत कर देव, अेहि विरद सुन तारन अेव;
पूजा करके नवाउं निज शीश, मुज अपराध क्षमहु जगदीश। ६

विसर्जन

देह छतां जेनी दशा, वर्ते देहातीत;
ते ज्ञानीनां चरणमां, हो वंदन अगणित.

अेह परमपद प्राप्तिनुं कर्युं ध्यान में,
गजा वगर ने हाल मनोरथरूप जो;

तो पण निश्चय राजचंद्र मनने रह्यो,
प्रभु–आज्ञाअे थाशुं ते ज स्वरूप जो;
अपूर्व अवसर अेवो क्यारे आवशे?

(पूजा पूर्ण होनेके बाद नौ बार नमस्कार मंत्रका जाप देना चाहिये)

आरती

लाख लाख दीवडानी आरती उतारजो,
लाख लाख तोरण बंधाय;
आंगणिये अवसर आनंदना.......(टेक)

लाख लाख द्रव्योनी पूजा रचावजो;
लाख लाख हाथे कराय. आंगणिये...लाख० १

खोबे खोबे रंग उडे गुलालना,
लाखो वधामणां जिनवरना आवतां;
लाखेणी भक्ति कराय. आंगणिये....लाख० २

गावो गावो गीत गाजो गवरावजो,
ताने ताने नाच नाची नचावजो;
लाखेणा ल्हावा लेवाय. आंगणिये...लाख० ३

लाख लाख गुरुजीना गुण गवरावजो;
लाख लाख (जीवोना) उद्धार करनार. आंगणिये....लाख० ४
जयकार जगतमां फेलाय आंगणिये...लाख लाख०

6th DAY POOJA

आराधना पाठ

(हरिगीत)

मैं देव नित अरहंत चाहूं, सिद्धका सुमिरन करौं;
मैं सूर गुरु मुनि तीनि पद मैं, साधुपद हृदये धरौं;
मैं धर्म करुणामयी चाहूं, जहां हिंसा रंच ना;
मैं शास्त्रज्ञान विराग चाहूं, जासु में परपंच ना॥१॥
चौबीस श्री जिनदेव चाहूं, और देव न मन बसैं;
जिन बीस क्षेत्र विदेह चाहूं, बंदिते पातिक नशैं;
गिरनार शिखर संमेद चाहूं, चम्पापुरी पावापुरी;
कैलास श्री जिनधाम चाहूं, भजत भांजें भ्रमजुरी॥२॥
नवतत्त्वका सरधान चाहूं, और तत्त्व न मन धरौं;
षटद्रव्य गुण परजाय चाहूं, ठीकतासों भय हरौं;
पूजा परम जिनराज चाहूं, और देव न हूं सदा;
तिहुंकालकी मैं जाप चाहूं, पाप नहि लागै कदा॥३॥
सम्यक्त्व दरशन ज्ञान चारित्र सदा चाहूं, भावसों;
दशलक्षणी मैं धर्म चाहूं, महा हर्ष उछावसों;
सोलह जु कारण दुःखनिवारण सदा चाहूं, प्रीतिसों;
मैं चित्त अठाई पर्व चाहूं महा मंगल रीतिसों॥४॥
मैं वेद चारों सदा चाहूं, आदि अंत निवाहसों,
पाअे धरमके चार चाहूं, अधिक चित्त उछाहसों;
मैं दान चारों सदा चाहूं, भुवन वशि लाहो लहूं,
आराधना मैं चारि चाहूं, अन्तमें ये ही गहूं॥५॥
भावना बारह सदा भाऊं, भाव निरमल होत हैं,
मैं व्रत जु बारह सदा चाहूं, त्याग भाव उद्योत हैं;

प्रतिमा दिगम्बर सदा चाहूं, ध्यान आसन सोहना,
वसुकर्मतैं मैं छुटा चाहूं, शिव लहूं जहुं मोह ना॥६॥
मैं साधुजनको संघ चाहूं, प्रीति तिन ही सों करौ,
मैं पर्वके उपवास चाहूं, अरम्भै मैं परिहरौं;
इस दुःख पंचमकाल माहीं, कुल शरावक मैं लहौं,
अरु महाव्रत धरि सकौं नाहीं निबल तन मैंने गहो॥७॥
आराधना उत्तम सदा चाहूं, सुनो जिनरायजी,
तुम कृपानाथ अनाथ 'द्यानत' दया करना न्यायजी;
वसुकर्मनाश विकाश ज्ञान प्रकाश मोको कीजीऐ,
करि सुगतिगमन समाधिमरन सुभक्ति चरनन दीजिऐ॥८॥

पूजाकी प्रारंभिक विधि

ॐ जय जय जय, नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोऐ सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः
(उपर्युक्त पाठ पढ़कर पुष्प यानी(अर्थात्) चंदनमिश्रित चावल थालीमें किये हुए स्वस्तिकके ऊपर चढ़ाना।)

मंगल

चत्तारि मंगलं—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्ञामि—अरहंते सरणं पव्वज्ञामि, सिद्धे सरणं पव्वज्ञामि, साहू सरणं पव्वज्ञामि, केवलिपण्णत्तो धम्मं सरणं पव्वज्ञामि।
ॐ ह्रीं नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलि चढ़ाना)

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः;
धवलमंगलगानरवाकुले जिनग्रहे जिननाथमहं यजे।
ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरतीर्थंकराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री कुंदकुंदाचार्यदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्रीसूर्यकीर्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर-जिनपूजा

(दोहा)

श्री सीमंधर आदि दे, विहरमान जिनराय;
पूजों पदजुग पद्म सम, सुर-शिवपद सुखदाय।
ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवोषट् इति आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्,
ॐ ह्रीं श्रीसीमंधरजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

परम प्रासुक नीर निर्मल, क्षीरदधि सम लीजिये;
हेम झारी मांहि भरके, धार सुंदर दीजिये।
तीर्थपति जिनराजजीकी, परम पावन पूज करो;
श्री सीमंधरनाथकी सौ, भावसे भक्ति लहो।
ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।
चंदन सुपावन दुःख मिटावन, अति सुगंध मिलाईऐ;
डाल कर कर्पूर केशर, नीरसों घिस ल्याईऐ....तीर्थपति०
ॐ ह्रीं श्री सीमंधरजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल तंदुल ले अखंडित, ज्योति निशिपति सम धरे;
कनक थारी मांहि धरके, पूज कर पायन परे;
तीर्थपति जिनराजजीकी, परम पावन पूज करो;
श्री सीमंधरनाथकी सौ, भावसे भक्ति लहो।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरवृक्ष के सम फूल लेकर, गंधधर मधुकर फिरे;
मदनबाण विनाशनेको, प्रभु-चरण पूजा करे....तीर्थपति०

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

छहों रसकर जुक्त नेवज, कनक थारीमें भरो;
भावसे प्रभु चरन पूजो, क्षुधादिक मनकी हरो।....तीर्थपति०

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रतनदीप कपूर बाती, ज्योत जगमग होत है,
मोहतिमिर विनाशवेको, भानु सम उद्योत है....तीर्थपति०

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कूट मलयागिरी चंदन, अगर आदि मिलाईअे,
ले दशांगी धूप सुंदर, अगन मांहिं जराईअे....तीर्थपति०

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरजिनेन्द्राय अषकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ल्याय केला श्रीफल दाडिम, और फल बहुते घने,
नेत्र रसना लगे सुंदर, फल अनूप चढावने....तीर्थपति०

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आवने,
धाय चरन चढाय भविजन, मोक्षफलको पावने....तीर्थपति०

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरनाथजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणधर्मपूजा

(अडिल्ल छंद)

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं;
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दश सार हैं,
चहुं गति दुखतैं काढि मुक्ति करतार हैं।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

हेमाचलकी धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि;
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल अखण्डित सार, तंदुल चन्द्रसमान शुभ। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल अनेक प्रकार, महकैं ऊरधलोक लों। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध निहार, उत्तम षटरससंगजुग। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाति कपूर सुधार, दीपकजोति सुहावनी। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलकी जाति अपार, घ्रान नयन मनमोहने।
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम संयमधर्म अर्घ

काय छहों प्रतिपाल, पंचेन्द्रिय मन वश करो;
संयम–रतन संभाल, विषयचोर बहु फिरत हैं।
उत्तम संयम गहु मन मेरे, भव भवके भाजे अघ तेरे;
सुरग नरक पशुगति में नाहीं, आलस हरन करन सुख ठाहीं।
ठाहीं पृथ्वी जल आग मारुत, रूख क्षस करुना धरो,
सपरसन रसना घ्रान नैना, कान मन सब वश करो;
जिस बिना नहि जिनराज सीझे, तू रुल्यो जगकीचमें,
इक धरी मत विसरो नित, आयु जममुख बीचमें।
ॐ ह्रीँ उत्तमसंयमधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

दशलच्छन वंदौ सदा, मनवांछित फलदाय,
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय। १
उत्तम छिमा जहां मन होई, अंतर बाहर शत्रु न कोई;
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नानाभेद ज्ञान सब भासै। २
उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्याग सुगति उपजावै;
उत्तम सत्यवचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै। ३
उत्तम शौच लोभ परिहारी, संतोषी गुनरतन भंडारी;
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै लै साता। ४

उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करमशत्रुको टालै;
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि–सुरशिव–सुख होई। ५
उत्तम आकिंचनव्रत धारे, परमसमाधिदशा विसतारे,
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुरसहित मुक्तिफल पावै। ६

(दोहा)

करे करमकी निरजरा, भवपींजरा विनाशि;
अजर अमरपदकों लहे, 'द्यानत' सुखकी राशि।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमा मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्माय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरुका अर्घ

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूं,
वर धूप निरमल फल विविध बहु जनमके पातक हरूं;
इह भांति अर्घ चढाय नित भवि करत शिव पंकति मचूं,
अरहंत श्रुत–सिद्धांत गुरु–निरग्रंथ नित पूजा रचूं।
वसुविधि अर्घ संजोयके अति उछाह मन कीन;
जासों पूजों परम पद देव शास्त्र गुरु तीन।
ॐ ह्रीँ देव-शास्त्र-गुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवानका अर्घ

पावन जल चंदन, अक्षत पुष्प रु, चरु वर दीपन, धूप धरों;
वर अर्घ उतारो, तुम पद धारो, नंदन तारो, पूज करो।
चरम तीर्थंकर जगत हितंकर, हे अभयंकर, वीर जिनं,
सब कर्म क्षयंकर, दया धुरंधर, जगजन शंकर, शर्म घनं।
ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवानका अर्घ

आठ विधि सौ अर्घ करिये आठ कर्म जु छीनवे,
मैं करहुं भविजन भगत प्रभुकी 'जसकरण' अे वीनवै,

श्री शान्तिनाथ जिनेश पूजौं भावसौं मन लायकैं;
शान्त करियौ कर्म सबरे मोक्षलक्ष्मी पायकैं.

ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंद्रप्रभु भगवानका अर्घ

वसुविधि अर्घ बनाय मनोहर श्री जिनमंदिर जावो,
अष्टकर्मके नाश करनको श्री जिनचरन चढावो;
चंचल चितको रोकी, चतुर्गति चक्र भ्रमण निरवारो,
चारु चरण आचरण चतुर नर चंद्रप्रभ चित धारो.

ॐ ह्रीँ श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवानका अर्घ

सलिल सुच्छ मलयागिर चंदन, अछित कुसुम चरु भरि थारी,
मणिदीप दसांग धूप फल उत्तम, अर्घ 'राम' करि सुखकारी;
श्री नेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पसुवनिकी रव सुनिकैं करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी.

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंदकुंदाचार्यदेवका अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य–मिश्रित, अर्घ कीजे पावना;
कुंदकुंदआदिक ऋद्धिधारक, मुनिनकी पूजा करूं;
ता करें पातिक हरें सारें, सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

श्री भावी तीर्थंकरका अर्घ

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लई दीप धूप फळ अर्घ, जिनवर पूज करुं;

अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीँ धातकीद्वीप–विदेहक्षेत्रस्थ भावि जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति

श्री सुवर्णपुरी तीर्थका अर्घ

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीँ श्री सुवर्णपुरी–अध्यात्मतीर्थे जिनमन्दिरे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, पद्मप्रभ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ आदि जिनेन्द्र; समवसरणे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, तत्पादमूल–विराजमान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव; मानस्तम्भे चतुर्दिक्षु बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी; परमागममन्दिरे बिराजमान भगवान श्री महावीरस्वामी, श्री समयसार आदि पंचपरमागम, श्री कुन्दकुन्दाचार्य–चरणचिह्न; 'गुरुदेवश्रीके वचनामृत' तथा 'बहिनश्रीके वचनामृत' इति उभयाभ्यां विभूषित पंचमेरु-नन्दीश्वरजिनालये बिराजमान भगवान श्री आदिनाथ, धातकीखण्ड विदेही भावी तीर्थंकर, जम्बु–भरतस्य भावी श्री महापद्म जिनवर; पंचमेरौ तथा नन्दीश्वर–द्वापंचाशत्-जिनालये बिराजमान सर्व शाश्वत जिनेन्द्र; जम्बूद्वीप-बाहुबली निर्माणाधीन आयतने विराजमान सर्व कृत्रिम-अकृत्रिम-शाश्वत जिनेन्द्रः, स्वाध्यायमन्दिरे प्रतिष्ठित श्री समयसार–इत्यादि सर्व वीतरागपूज्यपदेभ्यः पूजनार्थे महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधरका अर्घ

(राग–दयानिधि हो)

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुखके दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है;
शांति सुधाकरकी शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर–भगवान, चरण-पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीं विदेही–भावि श्री देवेन्द्रकीर्तिगणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति

श्री बाहुबली भगवानका अर्घ

वसुविधिके वस वसुधा सब की, परवश अति दुःख पावे,
तिहि दुःख दूर करनको भविजन, अर्घ जिनाग्र चढावे।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
तिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी।

ॐ ह्रीँ वर्तमान अवसर्पिणीसमये प्रथम मुक्तिस्थानप्राप्ताय कर्मरिविजये वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबली परमजिनदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति.

श्री सिद्ध भगवानका अर्घ

जल फल वसु वृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा;
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम बन्दा।
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवननामी, अंतरजामी, अभिरामी,
शिवपुरविश्रामी, निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।

ॐ ह्रीँ अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं, सिद्ध पूजूं चाव सों,
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भाव सों।
अर्हंत–भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी,
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा,
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहीं कदा;
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं,
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।

कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजुं सदा,
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा;
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के,
नामावली इक सहस वसु जय होय प्रति शिवगेह के।

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय;
सर्व पूज्य पद पूजहुं, बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीँ भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करवी कराववी–भावना भाववी, श्री अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी–पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग–करणानुयोग–चरणानुयोग–द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि षोडश कारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्‌चारित्रेभ्यो नमः। जल विषे, थल विषे, आकाश विषे, गुफा विषे, पहाड विषे, नगर–नगरी विषे, ऊर्ध्वलोक–मध्यलोक–पाताललोक विषे बिराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन–चैत्यालय जिन–बिंबेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र विद्यमान वीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पांच भरत, पांच ऐरावत–दस क्षेत्र संबंधी त्रीस चोवीसीना सातसो वीस जिनेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीपसंबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलास, चंपापुर, पावापुर, गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबिद्री, मूडबिद्री, राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा, सुवर्णपुरी आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण–ऋद्धिधारी सात परमऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(शान्तिपाठ बोलते वक्त दोंनों हाथोंसे पुष्पवृष्टि करना)

(चोपाई १६ मात्रा)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शीलगुणव्रतसंयमधारी;
लखन एक सौ आठ विराजै, निरखत नयन कमलदल लाजै।

पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी;
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमों शांतिहित शांति विद्यायक।

दिव्य विटप पहुपनकी वरषा, दुन्दुभी आसन वाणी सरसा;
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।

शांति जिनेश शांति सुखदाइ, जगतपूज्य पूजौं शिर नाइ;
परम शांति दीजें हम सबको, पढें तिन्हें पुनि चार संघको।

(वसंततिलका)

पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके;
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप।

(दोहा)

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज;
शांति करो सब जगतमें, वृषभादिक जिनराज।

विसर्जन

श्री सीमंधर जगधणी, आ भरते आवो;
करुणावंत करुणा करी, अमने वंदावो। १

सकल भक्त तुमे घणी, जो होवे अम नाथ;
भवो भव हुं छुं ताहरो नहीं मेलुं हवे साथ। २

सकल संग छंडी करी, चारित्र लईशुं;
पाय तुमारा सेवीने, शिवरमणी वरशुं। ३

अे अळजो मुजने घणो, पूरो सीमंधर देव;
इहां थकी हुं विनवुं, अवधारो मुज सेव। ४

(पूजा पूर्ण होनेके बाद नौ बार नमस्कार मंत्रका जाप देना चाहिये)

श्री सीमंधरजिनकी आरती

(राग-अबोलडा शाने लीधा छे)

आरती उतारूं हुं तो सीमंधरनाथनी;
वारी वारी मुखडुं निहाळ....हो देव जय जिनराया. १

उपशम रसभरी मुद्रा निहाळी;
तुज पर जाउं बलिहारी....हो देव जय जिनराया. २

रत्नमणिना दीपक प्रगटावी;
आरती उतारुं नाथ तारी....हो देव जय जिनराया. ३

शुक्ल ध्यानना श्रेणीअे चढिया;
केवळज्ञान उपजाया....हो देव जय जिनराया. ४

जगमग जगमग ज्योति प्रकाशी;
झळके छे ब्रह्मांडमांही....हो देव जय जिनराया. ५

ईन्द्रो नरेन्द्रो आरती उतारे;
भक्तिनी धून मचावे....हो देव जय जिनराया. ६

दिव्यध्वनिनो नाद ज छूट्यो;
झील्यो छे कहान गुरुदेवे....हो देव जय जिनराया. ७

जय जय आरती नाथ तुमारी;
भक्तोने आनंदकारी....हो देव जय जिनराया. ८

7th DAY POOJA

विनयपाठ

(दोहा)

इहि विधि ठाड़ो होयके, प्रथम पढै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥

अनंत चतुष्टयके धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति वधूके कंथ तुम, तीन भुवनके राज॥२॥

तिहुं जगकी पीडा हरण, भवदधिशोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्वके, शिवसुखके करतार॥३॥

हरता अघअंधियारके, करता धर्म प्रकाश।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुणराश॥४॥

धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोजको, नावत तिहुं जगभूप॥५॥

में वंदौं जिनदेवको, कर अति निरमल भाव।
कर्मबंधके छेदने, और न कछु उपाय॥६॥

भविजनको भवकूपतैं, तुम ही काढनहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार॥७॥

चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगतमें भविजनको शिव गैल॥८॥

तुम पद पंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रताको धरै, विष निरविषता थाय॥९॥

चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतें आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥

तुम विन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल विन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेय।
अंजनसे तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥१२॥
थकी नाव भवदधि विषे, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥
राग सहित जगमें रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेटयौ अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥
कित निगोद, कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥
तुमको पूजें सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥
अशरणके तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिंधुमें, खेओ लगाओ पार॥१७॥
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारकैं, कीजे आप समान॥१८॥
तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हौं, नेक निहार निकार॥१९॥
जो में कहहूं औरसों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तौसों बनी, तातैं करौं पुकार॥२०॥
वंदो पाँचौं परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघन हरन मंगल करन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥
चौवीसौं जिनपद नमों, नमो शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥२२॥

❀

पूजाकी प्रारंभिक विधि

ॐ जय जय जय, नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीँ अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः
(उपर्युक्त पाठ पढ़कर पुष्प यानी(अर्थात्) चंदनमिश्रित चावल थालीमें किये हुए स्वस्तिकके ऊपर चढ़ाना।)

मंगल

चत्तारि मंगलं—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ ह्रीँ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलि चढ़ाना)

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः;
धवलमंगलगानरवाकुले जिनग्रहे जिननाथमहं यजे।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरतीर्थंकराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री कुंदकुंदाचार्यदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीसूर्यकीर्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंदकुंदाचार्यदेवपूजा

(छप्पय)

श्री कुंदकुंद आचार्यवर, करूं तास पद थापना;
मैं पूजुं मन वच काय करि, जो सुख चाहूं आपना।

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदाचार्यादि मुनिराज! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः स्थापनम्;–अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणम्।

(गीता छंद)

शुभ–तीर्थ–उद्भव–जल अनूपम मिष्ट शीतल लायकैं,
भव–तृषा–कंद–निकंद–कारण शुद्ध–घट भरवायकैं;
कुंदकुंद आदिक ऋद्धिधारक मुनिन की पूजा करूं,
ता करें पातिक हरें सारे सकल आनंद विस्तरूं।
ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे जलं०

श्रीखंड कदलीनंद केशर, मंद मंद घिसायकैं;
तसु गंध प्रसरित दिग-दिगंतर, भर कटोरी लायकैं। कुंदकुंद०
ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे चंदनं०

अति धवल अक्षत खंड वर्जित, मिष्ट राजन भोगके;
कलधौत–थारा भरत सुंदर, चुनित शुभ उपयोगके। कुंदकुंद०
ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे अक्षतान्०

बहु-वर्ण सुवरण-सुमन आछे, अमल कमल गुलाबके;
केतकी चंपा चारु मरुआ, चुने निजकर चावके। कुंदकुंद०
ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे पुष्पं०

पकवान नानाभांति चातुर, रचित शुद्ध नये नये;
सदमिष्ट लाडू आदि भर बहु, पुरटके थारा लये। कुंदकुंद०

ॐ ह्रीं श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे नैवेद्यं०

कलधौत–दीपक जडित नाना, भरित गोधृत–सारसों,
अतिज्वलित जगमगज्योति जाकी, तिमिरनाशनहारसों।
कुंदकुंद आदिक ऋद्धिधारक, मुनिनकी पूजा करूं;
ता करें पातिक हरें सारें, सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीं श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे दीपं०

दीकूचक्र गंधित होत जाकर, धूप दश–अंगी कही;
सो लाय मनवचकाय शुद्ध, लगाय कर खेऊं अहीं। कुंदकुंद०

ॐ ह्रीं श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे धूपं०

वर दाख खारक अमित प्यारे, मिष्ट चुष्ट चुनायकैं;
द्रावडी दाडिम चारु पुंगी, थाल भर भर लायकैं। कुंदकुंद०

ॐ ह्रीं श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे फलं०

जल गंध अक्षत पुष्प चरु वर, दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य–मिश्रित, अर्घ कीजे पावना; कुंदकुंद०

ॐ ह्रीं श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

दशलक्षणधर्मपूजा

(अडिल्ल छंद)

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं;
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दश सार हैं,
चहुं गति दुखतैं काढि मुक्ति करतार हैं।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

हेमाचलकी धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि;
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल अखण्डित सार, तंदुल चन्द्रसमान शुभ। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल अनेक प्रकार, महकैं ऊरघलोक लों। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध निहार, उत्तम षटरससंगजुग। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाति कपूर सुधार, दीपकजोति सुहावनी। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलकी जाति अपार, घ्रान नयन मनमोहने। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों।
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम तपधर्म अर्घ

तप चाहें सुरराय, करमशिखरको वज्र है,
द्वादशविधि सुखदाय, क्यों न करे निज सकति सम।

उत्तम तप सबमाहिं बखाना, करमशिखरको वज्र समाना,
वस्यो अनादि निगोद मझारा, भू–विकलत्रय पशुतन धारा।

धारा मनुष तन महादुर्लभ, सुकुल आयु निरोगता,
श्रीजैनवानी तत्त्वज्ञानी, भई विषयपयोगता।
अति महादुर्लभ त्याग विषय, कषाय जो तप आदरै,
नरभव अनूपम कनक घरपर, मणिमयी कलसा धरैं।

ॐ ह्रीँ उत्तमतपधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

दशलच्छन वंदौ सदा, मनवांछित फलदाय,
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय। १

उत्तम छिमा जहां मन होई, अंतर बाहर शत्रु न कोई;
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नानाभेद ज्ञान सब भासै। २

उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्याग सुगति उपजावै;
उत्तम सत्यवचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै। ३

उत्तम शौच लोभ परिहारी, संतोषी गुनरतन भंडारी;
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै लै साता। ४

उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करमशत्रुको टालै;
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि–सुरशिव–सुख होई। ५

उत्तम आकिंचनव्रत धारे, परमसमाधिदशा विसतारे,
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुरसहित मुक्तिफल पावै। ६

(दोहा)

करे करमकी निरजरा, भवपींजरा विनाशि;
अजर अमरपदकों लहे, 'द्यानत' सुखकी राशि।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमा मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्माय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरुका अर्घ

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूं,
वर धूप निरमल फल विविध बहु जनमके पातक हरूं;
इह भांति अर्घ चढाय नित भवि करत शिव पंकति मचूं,
अरहंत श्रुत–सिद्धांत गुरु–निरग्रंथ नित पूजा रचूं।
वसुविधि अर्घ संजोयके अति उछाह मन कीन;
जासों पूजों परम पद देव शास्त्र गुरु तीन।

ॐ ह्रीँ देव-शास्त्र-गुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवानका अर्घ

पावन जल चंदन, अक्षत पुष्प रु, चरु वर दीपन, धूप धरों;
वर अर्घ उतारो, तुम पद धारो, नंदन तारो, पूज करो।
चरम तीर्थंकर जगत हितंकर, हे अभयंकर, वीर जिनं,
सब कर्म क्षयंकर, दया धुरंधर, जगजन शंकर, शर्म घनं।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवानका अर्घ

आठ विधि सौ अर्घ करिये आठ कर्म जु छीनवे,
मैं करहुं भविजन भगत प्रभुकी 'जसकरण' अे वीनवै,
श्री शान्तिनाथ जिनेश पूजौं भावसौं मन लायकैं;
शान्त करियौ कर्म सबरे मोक्षलक्ष्मी पायकैं.

ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंद्रप्रभु भगवानका अर्घ

वसुविधि अर्घ बनाय मनोहर श्री जिनमंदिर जावो,
अष्टकर्मके नाश करनको श्री जिनचरन चढावो;
चंचल चितको रोकी, चतुर्गति चक्र भ्रमण निरवारो,
चारु चरण आचरण चतुर नर चंद्रप्रभ चित धारो.

ॐ ह्रीँ श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवानका अर्घ

सलिल सुच्छ मलयागिर चंदन, अछित कुसुम चरु भरि थारी,
मणिदीप दसांग धूप फल उत्तम, अर्घ 'राम' करि सुखकारी;
श्री नेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पसुवनिकी रव सुनिकैं करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी.

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर भगवानका अर्घ

जल गंध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आवने,
धाय चरन चढाय भविजन, मोक्षफलको पावने.
तीर्थपति जिनराजजीकी, परम पावन पूज करो;
श्री सीमंधरनाथकी सौ, भावसे भक्ति लहो।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरनाथजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री भावी तीर्थंकरका अर्घ

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लई दीप धूप फळ अर्घ, जिनवर पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीँ धातकीद्वीप–विदेहक्षेत्रस्थ भावि जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति

श्री सुवर्णपुरी तीर्थंका अर्घ

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीँ श्री सुवर्णपुरी–अध्यात्मतीर्थे जिनमन्दिरे बिराजमान श्री

सीमन्धरस्वामी, पद्मप्रभ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ आदि जिनेन्द्र; समवसरणे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, तत्पादमूल–विराजमान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव; मानस्तम्भे चतुर्दिक्षु बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी; परमागममन्दिरे बिराजमान भगवान श्री महावीरस्वामी, श्री समयसार आदि पंचपरमागम, श्री कुन्दकुन्दाचार्य–चरणचिह्न; 'गुरुदेवश्रीके वचनामृत' तथा 'बहिनश्रीके वचनामृत' इति उभयाभ्यां विभूषित पंचमेरु–नन्दीश्वरजिनालये बिराजमान भगवान श्री आदिनाथ, धातकीखण्ड विदेही भावी तीर्थंकर, जम्बु–भरतस्य भावी श्री महापद्म जिनवर; पंचमेरौ तथा नन्दीश्वर–द्वापंचाशत्-जिनालये बिराजमान सर्व शाश्वत जिनेन्द्र; जम्बूद्वीप-बाहुबली निर्माणाधीन आयतने विराजमान सर्व कृत्रिम-अकृत्रिम-शाश्वत जिनेन्द्रः, स्वाध्यायमन्दिरे प्रतिष्ठित श्री समयसार–इत्यादि सर्व वीतरागपूज्यपदेभ्यः पूजनार्थे महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधरका अर्घ

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुखके दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है;
शांति सुधाकरकी शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर–भगवान, चरण-पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीं विदेही–भावि श्री देवेन्द्रकीर्तिगणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

श्री बाहुबली भगवानका अर्घ

वसुविधिके वस वसुधा सब की, परवश अति दुःख पावे,
तिहि दुःख दूर करनको भविजन, अर्घ जिनाग्र चढावे।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
तिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी।

ॐ ह्रीँ वर्तमान अवसर्पिणीसमये प्रथम मुक्तिस्थानप्राप्ताय कर्मरिविजये वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबली परमजिनदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति०

श्री सिद्ध भगवानका अर्घ

जल फल वसु वृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा;
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम बन्दा।

त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवननामी, अंतरजामी, अभिरामी,
शिवपुरविश्रामी, निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।

ॐ ह्रीँ अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं, सिद्ध पूजूं चाव सों,
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भाव सों।
अर्हंत–भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी,
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा,
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहीं कदा;
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं,
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।
कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजुं सदा,
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा;
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के,
नामावली इक सहस वसु जय होय प्रति शिवगेह के।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय;
सर्व पूज्य पद पूजहुं, बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीँ भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करवी कराववी–भावना भाववी, श्री अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी–पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग–करणानुयोग–चरणानुयोग–द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि षोडश कारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि

दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन–सम्यग्ज्ञान–सम्यक्‌चारित्रेभ्यो नमः। जल विषे, थल विषे, आकाश विषे, गुफा विषे, पहाड विषे, नगर–नगरी विषे, ऊर्ध्वलोक–मध्यलोक–पाताललोक विषे बिराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन–चैत्यालय जिन–बिंबेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र विद्यमान वीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पांच भरत, पांच ऐरावत–दस क्षेत्र संबंधी त्रीस चोवीसीना सातसो वीस जिनेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीपसंबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलास, चंपापुर, पावापुर, गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबिद्री, मूडबिद्री, राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा, सुवर्णपुरी आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण–ऋद्धिधारी सात परमऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

शांतिजिनेश्वर साचो साहेब, शांतिकरण अनुकूलमें हो जिनजी;
तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें, ध्यान धरूं पल पलमें साहेबजी;
तुं. मेरा० १

भवमां भमतां मैं दरिशन पायो, आशा पूरो एक पलमें हो जिनजी
तुं. मेरा० २

निरमल ज्योत वदन पर सोहे, निकस्यो ज्युं चंद वादळ में जिनजी
तुं. मेरा० ३

मेरो मन तुम साथे लीनो, मीन वसे ज्यु जळमें साहेबजी;
तुं. मेरा० ४

जिन रंग कहे प्रभु शांतिजिनेश्वर, दीठोजी देव सकळमें हो जिनजी.
तुं. मेरा० ५

विसर्जन

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया;
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर॥१॥

आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं;
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।२।।
मंत्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च;
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर।।३।।
मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमो गणी;
मंगलं कुंदकुंदार्यो जैनधर्मोऽस्तु मंगलम्।।४।।
सर्वमंगल मांगल्यं, सर्वकल्याणकारकं;
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम्।।५।।
(पूजा पूर्ण होनेके बाद नौ बार नमस्कार मंत्रका जाप देना चाहिये)

श्री कुंदकुंदाचार्यदेवकी आरती

हुं तो आरती उतारूं प्रभु कुंदनी रे;
प्रभु कुंदनी रे आचार्यदेवनी रे. हुं तो.
विदेह क्षेत्र जई भरतमां पधारीया रे;
सीमंधर देवना संदेशा रूडा लावीया रे. हुं तो.
चौद पूर्वना रहस्ये शास्त्र गूंथीया रे;
श्रुतज्ञानની तें नहेरो वहेवडावीयुं रे. हुं तो.
अचल ज्योति अखंड अनूपम अछे रे;
आत्म ख्याति खजाना अणमूल्य छे रे. हुं तो.
निज स्वरूपमांहे कुंदमुनि झूलता रे;
धन्य धन्य वनवासी अे मुनिवरा रे. हुं तो.
तुज शासनना नूर भरत भूमिअे रे;
दिव्य वाणीना दातार कानगुरु अछे रे. हुं तो.

8th DAY POOJA

आराधना पाठ

(हरिगीत)

मैं देव नित अरहंत चाहूं, सिद्धका सुमिरन करौं;
मैं सूर गुरु मुनि तीनि पद मैं, साधुपद हृदये धरौं;
मैं धर्म करुणामयी चाहूं, जहां हिंसा रंच ना;
मैं शास्त्रज्ञान विराग चाहूं, जासु में परपंच ना।।१।।
चौबीस श्री जिनदेव चाहूं, और देव न मन बसैं;
जिन बीस क्षेत्र विदेह चाहूं, बंदिते पातिक नशै;
गिरनार शिखर संमेद चाहूं, चम्पापुरी पावापुरी;
कैलास श्री जिनधाम चाहूं, भजत भांजें भ्रमजुरी।।२।।
नवतत्त्वका सरधान चाहूं, और तत्त्व न मन धरौं;
षटद्रव्य गुण परजाय चाहूं, ठीकतासों भय हरौं;
पूजा परम जिनराज चाहूं, और देव न हूं सदा;
तिहुंकालकी मैं जाप चाहूं, पाप नहि लागै कदा।।३।।
सम्यक्त्व दरशन ज्ञान चारित्र सदा चाहूं, भावसों;
दशलक्षणी मैं धर्म चाहूं, महा हर्ष उछावसों;
सोलह जु कारण दुःखनिवारण सदा चाहूं, प्रीतिसों;
मैं चित्त अठाई पर्व चाहूं महा मंगल रीतिसों।।४।।
मैं वेद चारों सदा चाहूं, आदि अंत निवाहसों,
पाअे धरमके चार चाहूं, अधिक चित्त उछाहसों;
मैं दान चारों सदा चाहूं, भुवन वशि लाहो लहूं,
आराधना मैं चारि चाहूं, अन्तमें ये ही गहूं।।५।।
भावना बारह सदा भाऊं, भाव निरमल होत हैं,
मैं व्रत जु बारह सदा चाहूं, त्याग भाव उद्योत हैं;

प्रतिमा दिगम्बर सदा चाहूं, ध्यान आसन सोहना,
वसुकर्मतैं मैं छुटा चाहूं, शिव लहूं जहुं मोह ना॥६॥
मैं साधुजनको संघ चाहूं, प्रीति तिन ही सों करौ,
मैं पर्वके उपवास चाहूं, अरम्भै मैं परिहरौं;
इस दुःख पंचमकाल माहीं, कुल शरावक मैं लहौं,
अरु महाव्रत धरि सकौं नाहीं निबल तन मैंने गहो॥७॥
आराधना उत्तम सदा चाहूं, सुनो जिनरायजी,
तुम कृपानाथ अनाथ 'द्यानत' दया करना न्यायजी;
वसुकर्मनाश विकाश ज्ञान प्रकाश मोको कीजीए,
करि सुगतिगमन समाधिमरन सुभक्ति चरनन दीजिए॥८॥

पूजाकी प्रारंभिक विधि

ॐ जय जय जय, नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीँ अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः
(उपर्युक्त पाठ पढ़कर पुष्प यानी(अर्थात्) चंदनमिश्रित चावल थालीमें किये हुए स्वस्तिकके ऊपर चढ़ाना।)

मंगल

चत्तारि मंगलं—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
ॐ ह्रीँ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलि चढ़ाना)

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः;
धवलमंगलगानरवाकुले जिनग्रहे जिननाथमहं यजे।
ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरतीर्थंकराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री कुंदकुंदाचार्यदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीसूर्यकीर्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वानुभूति-तीर्थ स्वर्णपुरी पूजा

(राग-सम्यक् सुक्षायिक जान)

स्वात्मानुभूति-प्रधान सुमंगल-स्वर्णपुरी,
संतोकी साधनाभूमि, अध्यातम तीर्थ बनी,
'तू परमातमा है', ये गाजे गुरुवाणी,
गुरुकहानका यह वरदान, सुंदर स्वर्णपुरी।

ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र अवतरत अवतरत संवोषट् इति आह्वाननम् ।
ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र तिष्ठत तिष्ठत ठः ठः इति स्थापनम् ।
ॐ ह्रीं श्री सौराष्ट्रदेशस्थ स्वर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु विराजमान-जिनबिंबानि ! अत्र मम सन्निहितानि भवत भवत, इति सन्निधिकरणम् ।

उज्ज्वल जल शीतल लाय सुवरण कलश भरे,
सब जिनवरजीको चढ़ाय ज्ञानामृत पावे,
अनुभूति तीर्थमहान, सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान, मंगल मुक्ति मिले।
ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः जलं निर्व०

कश्मीर सुकेसर ल्याय चंदन सुखकारी,
श्री जिनवरजीको चढ़ाय शांतिसुधा पावे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः चंदनं निर्व०

शुभ शालि अखंडित ल्याय, प्रभुजीके चरण धरूं,
अक्षयपद प्राप्ति काज अखंडित ध्यान करूं,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः अक्षतान् निर्व०

पंचवरणमय दिव्य फूल अनेक कहे,
श्री जिनवर पूजत पाद बहुविध पुण्य लहे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः पुष्पं निर्व०

फेणी खाजा पकवान, मोदक-सरस बने,
जिन चरणन देत चढ़ाय, दोष क्षुधादि टले,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः नैवेद्यम् निर्व०

दीपककी ज्योति जगाय मिथ्या तिमिर नशे,
तव चरनन सन्मुख जाय भव भव रोग टले,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यो दीपम् निर्व०

वर धूप सु दस विधि ल्याय, दस दिशि गंध भरे,
सब कर्म जलावत जाय, मानो नृत्य करे,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः धूपं निर्व०

ले फल उत्कृष्ट महान, जिनवर पद पूजूं,
लहुं मोक्ष परम शुभ-थान, तुम सम नहीं दूजो,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः फलं०।

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरीतीर्थे सर्वजिनायतनेषु बिराजमान-जिनबिंबेभ्यः अर्घं निर्व०

दशलक्षणधर्मपूजा

(अडिल्ल छंद)

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं;
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दश सार हैं,
चहुं गति दुखतैं काढि मुक्ति करतार हैं।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

हेमाचलकी धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि;
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल अखण्डित सार, तंदुल चन्द्रसमान शुभ। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरघलोक लों। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध निहार, उत्तम षटरससंगजुग। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाति कपूर सुधार, दीपकजोति सुहावनी। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फलकी जाति अपार, घ्रान नयन मनमोहने। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों। भवआताप०

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम त्यागधर्म अर्घ

दान चार परकार, चार संघको दीजिये,
धन विजुली उनहार, नरभव लाहो लीजिये।

उत्तम त्याग कह्यो जगसारा, औषधि शास्त्र अभय आहारा,
निहचै राग-द्वेष निरवारै, ज्ञाता दोनों दान संभारै।

दोनों संभारै कूपजल सम, दरब घरमें परनिया,
निज हाथ दीजे साथ लीजे, खाय खोया बह गया।
धनि साध शास्त्र अभय दिवैया, त्याग राग विरोधकों,
बिन दान श्रावक साध दोनों, लहैं नाहीं बोधकों।

ॐ ह्रीं उत्तमत्यागधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा

जयमाला

(दोहा)

दशलच्छन वंदौ सदा, मनवांछित फलदाय,
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय। १

उत्तम छिमा जहां मन होई, अंतर बाहर शत्रु न कोई;
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नानाभेद ज्ञान सब भासै। २
उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्याग सुगति उपजावै;
उत्तम सत्यवचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै। ३
उत्तम शौच लोभ परिहारी, संतोषी गुनरतन भंडारी;
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै लै साता। ४
उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करमशत्रुको टालै;
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि–सुरशिव–सुख होई। ५
उत्तम आकिंचनव्रत धारे, परमसमाधिदशा विसतारे,
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुरसहित मुक्तिफल पावै। ६

(दोहा)

करे करमकी निरजरा, भवपींजरा विनाशि;
अजर अमरपदकों लहे, 'द्यानत' सुखकी राशि।

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमा मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्माय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरुका अर्घ

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूं,
वर धूप निरमल फल विविध बहु जनमके पातक हरूं;
इह भांति अर्घ चढाय नित भवि करत शिव पंकति मचूं,
अरहंत श्रुत–सिद्धांत गुरु–निरग्रंथ नित पूजा रचूं।
वसुविधि अर्घ संजोयके अति उछाह मन कीन;
जासों पूजों परम पद देव शास्त्र गुरु तीन।

ॐ ह्रीँ देव-शास्त्र-गुरुभ्य: अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवानका अर्घ

पावन जल चंदन, अक्षत पुष्प रु, चरु वर दीपन, धूप धरों;
वर अर्घ उतारो, तुम पद धारो, नंदन तारो, पूज करो।
चरम तीर्थंकर जगत हितंकर, हे अभयंकर, वीर जिनं,
सब कर्म क्षयंकर, दया धुरंधर, जगजन शंकर, शर्म घनं।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवानका अर्घ

आठ विधि सौ अर्घ करिये आठ कर्म जु छीनवे,
मैं करहुं भविजन भगत प्रभुकी 'जसकरण' अे वीनवै,
श्री शान्तिनाथ जिनेश पूजौं भावसौं मन लायकैं;
शान्त करियौ कर्म सबरे मोक्षलक्ष्मी पायकैं.

ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंद्रप्रभु भगवानका अर्घ

वसुविधि अर्घ बनाय मनोहर श्री जिनमंदिर जावो,
अष्टकर्मके नाश करनको श्री जिनचरन चढावो;
चंचल चितको रोकी, चतुर्गति चक्र भ्रमण निरवारो,
चारु चरण आचरण चतुर नर चंद्रप्रभ चित धारो.

ॐ ह्रीँ श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवानका अर्घ

सलिल सुच्छ मलयागिर चंदन, अछित कुसुम चरु भरि थारी,
मणिदीप दसांग धूप फल उत्तम, अर्घ 'राम' करि सुखकारी;
श्री नेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पसुवनिकी रव सुनिकैं करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी.

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर भगवानका अर्घ

जल गंध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आवने,
धाय चरन चढाय भविजन, मोक्षफलको पावने.
तीर्थपति जिनराजजीकी, परम पावन पूज करो;
श्री सीमंधरनाथकी सौ, भावसे भक्ति लहो।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरनाथजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंदकुंदाचार्यदेवका अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य–मिश्रित, अर्घ कीजे पावना;
कुंदकुंदआदिक ऋद्धिधारक, मुनिनकी पूजा करूं;
ता करें पातिक हरें सारें, सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

श्री भावी तीर्थंकरका अर्घ

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लई दीप धूप फळ अर्घ, जिनवर पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीँ धातकीद्वीप–विदेहक्षेत्रस्थ भावि जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्रासये अर्घं निर्वपामीति

देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधरका अर्घ

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुखके दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है;
शांति सुधाकरकी शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर–भगवान, चरण-पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीं विदेही–भावि श्री देवेन्द्रकीर्तिगणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति

श्री बाहुबली भगवानका अर्घ

वसुविधिके वस वसुधा सब की, परवश अति दुःख पावे,
तिहि दुःख दूर करनको भविजन, अर्घ जिनाग्र चढावे।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
तिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी।

ॐ ह्रीँ वर्तमान अवसर्पिणीसमये प्रथम मुक्तिस्थानप्राप्ताय कर्मरिविजये वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबली परमजिनदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति.

श्री सिद्ध भगवानका अर्घ

जल फल वसु वृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा;
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम बन्दा।
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवननामी, अंतरजामी, अभिरामी,
शिवपुरविश्रामी, निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।

ॐ ह्रीँ अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं, सिद्ध पूजूं चाव सों,
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भाव सों।

अर्हंत–भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी,
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा,
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहीं कदा;
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं,
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।
कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजुं सदा,
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा;
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के,
नामावली इक सहस वसु जय होय प्रति शिवगेह के।

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय;
सर्व पूज्य पद पूजहुं, बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीँ भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करवी कराववी–भावना भाववी, श्री अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी–पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग–करणानुयोग–चरणानुयोग–द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि षोडश कारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्‌चारित्रेभ्यो नमः। जल विषे, थल विषे, आकाश विषे, गुफा विषे, पहाड विषे, नगर–नगरी विषे, ऊर्ध्वलोक–मध्यलोक–पाताललोक विषे बिराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन–चैत्यालय जिन–बिंबेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र विद्यमान वीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पांच भरत, पांच ऐरावत–दस क्षेत्र संबंधी त्रीस चोवीसीना सातसो वीस जिनेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीपसंबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलास, चंपापुर, पावापुर, गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबिद्री, मूडबिद्री, राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा, सुवर्णपुरी आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण–ऋद्धिधारी सात परमऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(चौपाई)

मैं तुम चरण कमल गुण गाय, बहुविधि भक्ति करूं मन लाय;
जनम जनम प्रभु पाउं तोहि, यह सेवाफल दीजे मोहि। १

कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन मरन मिटावो मोय;
वार वार मैं विनती करूं, तुम सेये भवसागर तरूं। २

नाम लेत सब दुःख मिट जाय, तुम दर्शन देख्या प्रभु आय;
तुम हो प्रभु देवनके देव, मैं तो करूं चरण तव सेव। ३

मैं आयो पूजनके काज, मेरो जन्म सफल भयो आज;
जो मुझ सेवककी अरदास, सो सब रही ज्ञानमें भास। ४

यातें नहि कुछ कहनी परे, तुमही तें सब कारज सरे;
तुमरे गुणोंको स्वामी अंत न पार, तुम बिन कौन लगावे पार। ५

''तार तार'' विल मत कर देव, अेहि विरद सुन तारन अेव;
पूजा करके नवाउं निज शीश, मुज अपराध क्षमहु जगदीश। ६

विसर्जन

परमेश्वर परमात्मा, पावन तू परमिट्ठ;
जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिट्ठ। १

अचल अकल अविकार सार, करुणारस सिंधु;
जगति जन आधार अेक, निष्कारण बंधु। २

गुण अनंत प्रभु ताहरा अे, किमही कळ्या न जाय;
भक्ति धरुं जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय। ३

(पूजा पूर्ण होनेके बाद नौ बार नमस्कार मंत्रका जाप देना चाहिये)

ॐ जय जिनवरदेवा

ॐ जय जिनवरदेवा, प्रभु जय जिनवरदेवा,
निशदिन देजो हे.....जगदीश्वर पदपंकजसेवा.....ॐ

दिव्यानंदी, दिव्यप्रकाशी, दैवी तुज देदार,
रिद्धि-सिद्धि-सुखनिधिना स्वामी, नित्य सुमंगलकार.....ॐ

आज अमारे आंगणे पधार्या जिनवर जयवंता,
खंडधातकी-महाविदेही भावी भगवंता.....ॐ

पूर्णगुणे परिणत परमेश्वर, त्रिलोक-तारणहार,
आवो पधारो त्रिभुवनतीरथ! आतमना आधार!.....ॐ

कृपा करो हे जिनवर! मारां, थाय पूरां सौ काज,
सत्वर शिवपद दो सेवकने, चरण पूजुं जिनराज!.....ॐ

9th DAY POOJA

विनयपाठ

(दोहा)

इहि विधि ठाड़ो होयके, प्रथम पढै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।१।।

अनंत चतुष्टयके धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति वधूके कंथ तुम, तीन भुवनके राज।।२।।

तिहुं जगकी पीडा हरण, भवदधिशोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्वके, शिवसुखके करतार।।३।।

हरता अघअंधियारके, करता धर्म प्रकाश।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुणराश।।४।।

धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोजको, नावत तिहुं जगभूप।।५।।

में वंदौं जिनदेवको, कर अति निरमल भाव।
कर्मबंधके छेदने, और न कछु उपाय।।६।।

भविजनको भवकूपतैं, तुम ही काढनहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार।।७।।

चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगतमें भविजनको शिव गैल।।८।।

तुम पद पंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रताको धरै, विष निरविषता थाय।।९।।

चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतें आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप।।१०।।

तुम विन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल विन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।।११।।
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेय।
अंजनसे तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव।।१२।
थकी नाव भवदधि विषे, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव।।१३।।
राग सहित जगमें रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेटयौ अबै, मेटो राग कुटेव।।१४।।
कित निगोद, कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान।।१५।।
तुमको पूजें सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव।।१६।।
अशरणके तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिंधुमें, खेओ लगाओ पार।।१७।।
इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारकैं, कीजे आप समान।।१८।।
तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हाँ, नेक निहार निकार।।१९।।
जो में कहहूं औरसों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तौसों बनी, तातैं करौं पुकार।।२०।।
वंदो पाँचौं परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघन हरन मंगल करन, पूरन परम प्रकाश।।२१।।
चौवीसौं जिनपद नमों, नमो शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय।।२२।।

पूजाकी प्रारंभिक विधि

ॐ जय जय जय, नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीँ अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः

(उपर्युक्त पाठ पढ़कर पुष्प यानी(अर्थात्) चंदनमिश्रित चावल थालीमें किये हुए स्वस्तिकके ऊपर चढ़ाना।)

मंगल

चत्तारि मंगलं—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ ह्रीँ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलि चढ़ाना)

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः;
धवलमंगलगानरवाकुले जिनग्रहे जिननाथमहं यजे।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरतीर्थंकराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री कुंदकुंदाचार्यदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीसूर्यकीर्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री धातकीविदेह-भाविजिनपूजा

(जोगीरासा)

धातकी खंड विदेहधाम बहु आनंदमंगळकारी,
ज्यां वर्षे तीर्थंकर प्रभुनो ध्वनि शाश्वत सुखकारी;
तत्र बिराजे त्रिभुवन तारक भाविना भगवंता,
अहो! पधार्या भरतभूमिमां करुणामूर्ति जिणंदा।

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत् देवाधिदेव श्री तीर्थंकरदेव ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम् ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम् ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम् !

(राग : नंदीश्वर श्री जिनधाम)

क्षीरोदधिथी भरी नीर, कंचन कळश भरी,
प्रभु तव पद पूजुं जाय आवागमन टळी;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्-देवाधिदेव श्री तीर्थंकरनाथ-चरणकमलपूजनार्थं जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन साथ केसर घसी लाउं,
मम भव आताप नशाव, प्रभु तुज पाय पडुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत्....संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्व०

प्रक्षालित अक्षत शुद्ध, कंचन थाल भरुं,
अक्षय पद प्राप्ति काज प्रभु पद पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,

जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत् ... अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्व०

जासुद, चंपा, सुगुलाब, सुरभि थाळ भरुं,
मम कामबाण कर नाश, प्रभु तुज चरण धरुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत् ... कामबाणविनाशनाय पुष्पं निर्व०

फेणी खाजा पकवान, मोदक भरी लावुं,
मम क्षुधारोग निरवार, प्रभु सन्मुख जाउं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत् ... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्व०

पूजु मणिदीप हजूर, आतमज्योति जगे,
कर मोह तिमिरने दूर, भवनो भय भागे;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत् ... मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्व०

लई अगर तगर कर्पूर दश विधि धूप करी,
प्रभु सन्मुख खेउं जाय कर्म कलंक बळी;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत् ... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्व०

पिस्ता किसमिस बादाम, श्रीफळ सोपारी,
मागुं शिवफळ तत्काळ, प्रभुपद बलिहारी;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत् ... मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्व०

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लई दीप धूप फळ अर्घ, जिनवर पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी ।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीपे विदेहक्षेत्रे भविष्यत् ... अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

दशलक्षणधर्मपूजा

(अडिल्ल छंद)

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं;
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दश सार हैं,
चहुं गति दुखतैं काढि मुक्ति करतार हैं।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

हेमाचलकी धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि;
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा।
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।
अमल अखण्डित सार, तंदुल चन्द्रसमान शुभ। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
फूल अनेक प्रकार, महकें ऊरघलोक लों। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
नेवज विविध निहार, उत्तम षटरससंगजुग। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
बाति कपूर सुधार, दीपकजोति सुहावनी। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फलकी जाति अपार, घ्रान नयन मनमोहने। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम आकिंचनधर्म अर्घ

परिग्रह चौबिस भेद, त्याग करें मुनिराजजी;
तिसनाभाव उछेद, घटती जान घटाईये।
उत्तम आकिंचन गुण जानौ, परिग्रहचिंता दुख ही मानौ;
फांस तनकसी तनमें सालै, चाह लंगोटीकी दुख भालै।
भालै न समता सुख कभी नर, विना मुनिमुद्रा धरें,
धनि नगनपर तन नगन ठांडे, सुर असुर पायनि परें।
घरमांहि तिसना जो घटावै, रुचि नहीं संसारसौं;
बहु धन बुरा हू भला कहिये, लीन पर उपगारसौं।
ॐ ह्रीँ उत्तमआकिंचनधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

दशलच्छन वंदौ सदा, मनवांछित फलदाय,
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय। १
उत्तम छिमा जहां मन होई, अंतर बाहर शत्रु न कोई;
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नानाभेद ज्ञान सब भासै। २
उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्याग सुगति उपजावै;
उत्तम सत्यवचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै। ३
उत्तम शौच लोभ परिहारी, संतोषी गुनरतन भंडारी;
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै लै साता। ४
उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करमशत्रुको टालै;
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि–सुरशिव–सुख होई। ५
उत्तम आकिंचनव्रत धारे, परमसमाधिदशा विसतारे,
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुरसहित मुक्तिफल पावै। ६

(दोहा)

करे करमकी निरजरा, भवपींजरा विनाशि;
अजर अमरपदकों लहे, 'द्यानत' सुखकी राशि।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमा मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्माय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरुका अर्घ

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूं,
वर धूप निरमल फल विविध बहु जनमके पातक हरूं;
इह भांति अर्घ चढाय नित भवि करत शिव पंकति मचूं,
अरहंत श्रुत–सिद्धांत गुरु–निरग्रंथ नित पूजा रचूं।
वसुविधि अर्घ संजोयके अति उछाह मन कीन;
जासों पूजों परम पद देव शास्त्र गुरु तीन।
ॐ ह्रीँ देव-शास्त्र-गुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवानका अर्घ

पावन जल चंदन, अक्षत पुष्प रु, चरु वर दीपन, धूप धरों;
वर अर्घ उतारो, तुम पद धारो, नंदन तारो, पूज करो।
चरम तीर्थंकर जगत हितंकर, हे अभयंकर, वीर जिनं,
सब कर्म क्षयंकर, दया धुरंधर, जगजन शंकर, शर्म घनं।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवानका अर्घ

आठ विधि सौ अर्घ करिये आठ कर्म जु छीनवे,
मैं करहुं भविजन भगत प्रभुकी 'जसकरण' अे वीनवे,
श्री शान्तिनाथ जिनेश पूजौं भावसौं मन लायकैं;
शान्त करियौ कर्म सबरे मोक्षलक्ष्मी पायकैं.

ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंद्रप्रभु भगवानका अर्घ

वसुविधि अर्घ बनाय मनोहर श्री जिनमंदिर जावो,
अष्टकर्मके नाश करनको श्री जिनचरन चढावो;
चंचल चितको रोकी, चतुर्गति चक्र भ्रमण निरवारो,
चारु चरण आचरण चतुर नर चंद्रप्रभ चित धारो.

ॐ ह्रीँ श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवानका अर्घ

सलिल सुच्छ मलयागिर चंदन, अछित कुसुम चरु भरि थारी,
मणिदीप दसांग धूप फल उत्तम, अर्घ 'राम' करि सुखकारी;
श्री नेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पसुवनिकी रव सुनिकैं करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी.

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर भगवानका अर्घ

जल गंध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आवने,
धाय चरन चढाय भविजन, मोक्षफलको पावने.
तीर्थपति जिनराजजीकी, परम पावन पूज करो;
श्री सीमंधरनाथकी सौ, भावसे भक्ति लहो।

ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरनाथजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं०

श्री कुंदकुंदाचार्यदेवका अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य–मिश्रित, अर्घ कीजे पावना;
कुंदकुंदआदिक ऋद्धिधारक, मुनिनकी पूजा करूं;
ता करें पातिक हरें सारें, सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

श्री सुवर्णपुरी तीर्थका अर्घ

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीँ श्री सुवर्णपुरी–अध्यात्मतीर्थे जिनमन्दिरे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, पद्मप्रभ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ आदि जिनेन्द्र; समवसरणे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, तत्पादमूल–विराजमान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव; मानस्तम्भे चतुर्दिक्षु बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी; परमागममन्दिरे बिराजमान भगवान श्री महावीरस्वामी, श्री समयसार आदि पंचपरमागम, श्री कुन्दकुन्दाचार्य–चरणचिह्न; 'गुरुदेवश्रीके वचनामृत' तथा 'बहिनश्रीके वचनामृत' इति उभयाभ्यां विभूषित पंचमेरु–नन्दीश्वरजिनालये बिराजमान भगवान श्री आदिनाथ, धातकीखण्ड विदेही भावी तीर्थंकर, जम्बु–भरतस्य भावी श्री महापद्म जिनवर; पंचमेरौ तथा नन्दीश्वर–द्वापंचाशत्–जिनालये बिराजमान सर्व शाश्वत जिनेन्द्र; जम्बूद्वीप-बाहुबली निर्माणाधीन आयतने विराजमान सर्व कृत्रिम-अकृत्रिम-शाश्वत जिनेन्द्रः, स्वाध्यायमन्दिरे प्रतिष्ठित श्री समयसार–इत्यादि सर्व वीतरागपूज्यपदेभ्यः पूजनार्थे महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधरका अर्घ

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुखके दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है;
शांति सुधाकरकी शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर–भगवान, चरण-पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीं विदेही–भावि श्री देवेन्द्रकीर्तिगणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

श्री बाहुबली भगवानका अर्घ

वसुविधिके वस वसुधा सब की, परवश अति दुःख पावे,
तिहि दुःख दूर करनको भविजन, अर्घ जिनाग्र चढावे।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
तिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी।

ॐ ह्रीँ वर्तमान अवसर्पिणीसमये प्रथम मुक्तिस्थानप्राप्ताय कर्मरिविजये वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबली परमजिनदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति०

श्री सिद्ध भगवानका अर्घ

जल फल वसु वृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा;
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम बन्दा।
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवननामी, अंतरजामी, अभिरामी,
शिवपुरविश्रामी, निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।

ॐ ह्रीँ अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं, सिद्ध पूजूं चाव सों,
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भाव सों।
अर्हंत–भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी,
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।

सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा,
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहीं कदा;
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं,
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।
कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजुं सदा,
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा;
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के,
नामावली इक सहस वसु जय होय प्रति शिवगेह के।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय;
सर्व पूज्य पद पूजहुं, बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीँ भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करवी कराववी–भावना भाववी, श्री अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी–पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग–करणानुयोग–चरणानुयोग–द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्धयादि षोडश कारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल विषे, थल विषे, आकाश विषे, गुफा विषे, पहाड विषे, नगर-नगरी विषे, ऊर्ध्वलोक–मध्यलोक–पाताललोक विषे बिराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन–चैत्यालय जिन–बिंबेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र विद्यमान वीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पांच भरत, पांच ऐरावत–दस क्षेत्र संबंधी त्रीस चोवीसीना सातसो वीस जिनेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीपसंबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलास, चंपापुर, पावापुर, गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबिद्री, मूडबिद्री, राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा, सुवर्णपुरी आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण–ऋद्धिधारी सात परमऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(शान्तिपाठ बोलते वक्त दोंनों हाथोंसे पुष्पवृष्टि करना)
(चोपाई १६ मात्रा)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शीलगुणव्रतसंयमधारी;
लखन एक सौ आठ विराजै, निरखत नयन कमलदल लाजै।

पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी;
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमों शांतिहित शांति विद्यायक।

दिव्य विटप पहुपनकी वरषा, दुन्दुभी आसन वाणी सरसा;
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।

शांति जिनेश शांति सुखदाइ, जगतपूज्य पूजौं शिर नाइ;
परम शांति दीजें हम सबको, पढें तिन्हें पुनि चार संघको।

(वसंततिलका)

पूजें जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके;
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप।

(दोहा)

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज;
शांति करो सब जगतमें, वृषभादिक जिनराज।

विसर्जन

देह छतां जेनी दशा, वर्ते देहातीत;
ते ज्ञानीनां चरणमां, हो वंदन अगणित.

अेह परमपद प्राप्तिनुं कर्युं ध्यान में,
गजा वगर ने हाल मनोरथरूप जो;

तो पण निश्चय राजचंद्र मनने रह्यो,
प्रभु–आज्ञाअे थाशुं ते ज स्वरूप जो;
अपूर्व अवसर अेवो क्यारे आवशे?

(पूजा पूर्ण होनेके बाद नौ बार नमस्कार मंत्रका जाप देना चाहिये)

श्री सूर्यकीर्तिजिन आरती

धन्य धन्य आज घडी कैसी सुखकार है,
सूर्यकीर्ति दरबार लगा सीमंधर दरबार है.

खुशियां अपार आज हर दिलपे छांई हैं,
दर्शनके हेतु सब जनता अकुलाई है, जनता अकुलाई हैं,
चारों ओर देखलो भीड बेसुमार है. सूर्यकीर्ति०१

भक्तिसे नृत्य–गान कोई हैं कर रहे,
आतम सुबोध कर पापोंसे डर रहे, पापोंसे डर रहे;
पल पल पुण्यका भरे भंडार है. सूर्यकीर्ति०२

जय जयके नादसे गुंजा आकाश है,
छूटेंगे पाप सब निश्चय ये आश है, निश्चय ये आश है;
देखलो 'सौभाग्य' खुला आज मुक्तिद्वार है. सूर्यकीर्ति०३

10th DAY POOJA

आराधना पाठ

(हरिगीत)

मैं देव नित अरहंत चाहूं, सिद्धका सुमिरन करौं;
मैं सूर गुरु मुनि तीनि पद मैं, साधुपद हृदये धरौं;
मैं धर्म करुणामयी चाहूं, जहां हिंसा रंच ना;
मैं शास्त्रज्ञान विराग चाहूं, जासु में परपंच ना॥१॥
चौबीस श्री जिनदेव चाहूं, और देव न मन बसैं;
जिन बीस क्षेत्र विदेह चाहूं, बंदिते पातिक नशैं;
गिरनार शिखर संमेद चाहूं, चम्पापुरी पावापुरी;
कैलास श्री जिनधाम चाहूं, भजत भांजें भ्रमजुरी॥२॥
नवतत्त्वका सरधान चाहूं, और तत्त्व न मन धरौं;
षटद्रव्य गुण परजाय चाहूं, ठीकतासों भय हरौं;
पूजा परम जिनराज चाहूं, और देव न हूं सदा;
तिहुंकालकी मैं जाप चाहूं, पाप नहि लागै कदा॥३॥
सम्यकृत्व दरशन ज्ञान चारित्र सदा चाहूं, भावसों;
दशलक्षणी मैं धर्म चाहूं, महा हर्ष उछावसों;
सोलह जु कारण दुःखनिवारण सदा चाहूं, प्रीतिसों;
मैं चित्त अठाई पर्व चाहूं महा मंगल रीतिसों॥४॥
मैं वेद चारों सदा चाहूं, आदि अंत निवाहसों,
पाऐ धरमके चार चाहूं, अधिक चित्त उछाहसों;
मैं दान चारों सदा चाहूं, भुवन वशि लाहो लहूं,
आराधना मैं चारि चाहूं, अन्तमें ये ही गहूं॥५॥
भावना बारह सदा भाऊं, भाव निरमल होत हैं,
मैं व्रत जु बारह सदा चाहूं, त्याग भाव उद्योत हैं;

प्रतिमा दिगम्बर सदा चाहूं, ध्यान आसन सोहना,
वसुकर्मतैं मैं छुटा चाहूं, शिव लहूं जहुं मोह ना॥६॥
मैं साधुजनको संघ चाहूं, प्रीति तिन ही सों करौ,
मैं पर्वके उपवास चाहूं, अरम्भै मैं परिहरौं;
इस दुःख पंचमकाल माहीं, कुल शरावक मैं लहौं,
अरु महाव्रत धरि सकौं नाहीं निबल तन मैंने गहो॥७॥
आराधना उत्तम सदा चाहूं, सुनो जिनरायजी,
तुम कृपानाथ अनाथ 'द्यानत' दया करना न्यायजी;
वसुकर्मनाश विकाश ज्ञान प्रकाश मोको कीजीऐ,
करि सुगतिगमन समाधिमरन सुभक्ति चरनन दीजिऐ॥८॥

पूजाकी प्रारंभिक विधि

ॐ जय जय जय, नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोऐ सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीँ अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः

(उपर्युक्त पाठ पढ़कर पुष्प यानी(अर्थात्) चंदनमिश्रित चावल थालीमें किये हुए स्वस्तिकके ऊपर चढ़ाना।)

मंगल

चत्तारि मंगलं—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्ञामि—अरहंते सरणं पव्वज्ञामि, सिद्धे सरणं पव्वज्ञामि, साहू सरणं पव्वज्ञामि, केवलिपण्णत्तो धम्मं सरणं पव्वज्ञामि।

ॐ ह्रीँ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलि चढ़ाना)

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः;
धवलमंगलगानरवाकुले जिनग्रहे जिननाथमहं यजे।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरतीर्थंकराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री कुंदकुंदाचार्यदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्रीसूर्यकीर्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।
ॐ ह्रीँ श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नत्रयपूजा

(दोहा)

चहुं–गति–फणिविषहरन–मणि, दुखपावक जलधार;
शिवसुखसुधासरोवरी, सम्यकत्रयी निहार।

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।
ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

क्षीरोदधि उनहार, उज्ज्वल जल अति सोहनो;
जनमरोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूं।

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रयाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि०

चंदन केसर गारि, परिमल महा सुगंधमय; जनमरोग०

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रयाय भवातापविनाशनाय चंदनं नि०

तंदुल अमल चितार, वासमती सुखदासके; जनमरोग०

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि०

महकें फूल अपार, अलि गुंजें ज्यों थुति करै;
जनमरोग निरवार, सम्यक् रत्नत्रय भजूं।

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि०

लाडू बहु विस्तार, चीकन मिष्ट सुगंधयुत; जनमरोग०

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् नि०

दीप रतनमय सार, ज्योत प्रकाशै जगतमें; जनमरोग०

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रयाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं नि०

धूप सुवास विथार, चंदन अगर कपूरकी; जनमरोग०

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय धूपं नि०

फल शोभा अधिकार, लोंग छुहारे जायफल; जनमरोग०

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि०

आठ दरब निरधार, उत्तमसौं उत्तम लियो; जनमरोग०

ॐ ह्रीँ सम्यग्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

श्री चौबीस-जिनपूजा

(कवित्त छंद)

वृषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पद्म सुपास जिनराय,
चंद पुहुप शीतल श्रेयांस नमि, वासुपूज्य पूजित सुरराय;
विमल अनंत धरम जस उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय,
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु, वर्धमान पद पुष्प चढाय।

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतिजिनसमूह! अत्र अवतरत अवतरत संवौषट् इति आह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भवत भवत वषट् सन्निधिकरणं।

(नंदीश्वरनी चाल)

मुनिमन सम उज्ज्वल नीर, प्रासुक गंध भरा,
भरि कनक कटोरी धीर, दीनी धार धरा;
चौवीसों श्री जिनचंद, आनंदकंद सही,
पद जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही।

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

गोशीर कपूर मिलाय, केशर रंग भरी;
जिन चरनन देत चढाय, भव आताप हरी। चौवीसों०

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः भवतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तंदुल सित सोम समान, सुंदर अनियारे;
मुक्ताफल की उनमान, पुंज धरों प्यारे। चौवीसों०

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

वर कंज कदंब करंड, सुमन सुगंध भरे;
जिन अग्र धरों गुणमंड, काम कलंक हरे। चौवीसों०

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मन मोदन मोदक आदि, सुंदर सद्य बने;
रसपूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने। चौवीसों०

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तमखंडन दीप जगाय, धारों तुम आगे;
सब तिमिरमोह क्षय जाय, ज्ञानकला जागे। चौवीसों०

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंघ हुतासन मांहि, हे प्रभु खेवत हों;
मिस घूम करम जरि जांहि, तुम पद सेवत हों। चौवीसों०

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

शुचि पक्व सरस फल सार, सब ऋतुके ल्यायो;
देखत दृग-मनको प्यार, पूजत सुख पायो। चौवीसों०

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फल आठों शुचि सार, ताकौ अर्घ करों;
तुमको अरपों भवतार, भवतरि मोक्ष वरों। चौवीसों०

ॐ ह्रीँ श्रीवृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षणधर्मपूजा

(अडिल्ल छंद)

उत्तम छिमा मारदव आरजव भाव हैं,
सत्य शौच संयम तप त्याग उपाव हैं;
आकिंचन ब्रह्मचरज धरम दश सार हैं,
चहुं गति दुखतैं काढि मुक्ति करतार हैं।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः इति स्थापनम्।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्म ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् इति सन्निधिकरणम्।

(सोरठा)

हेमाचलकी धार, मुनिचित सम शीतल सुरभि;
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन केशर गार, होय सुवास दशों दिशा। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अमल अखण्डित सार, तंदुल चन्द्रसमान शुभ। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

फूल अनेक प्रकार, महकैं ऊरघलोक लों। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नेवज विविध निहार, उत्तम षटरससंगजुग। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बाति कपूर सुधार, दीपकजोति सुहावनी। भवआताप०

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगर धूप विस्तार, फैले सर्व सुगन्धता।
भवआताप निवार दसलच्छन पूजुं सदा।
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
फलकी जाति अपार, घ्रान नयन मनमोहने। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय फलं निर्वपामीति स्वाहा।
आठों दरब संवार, 'द्यानत' अधिक उछाहसों। भवआताप०
ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमादिदशलक्षणधर्माय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

उत्तम ब्रह्मचर्यधर्म अर्घ

शीलबाजि नौ राख, ब्रह्मभाव अंतर लखो;
करि दोनों अभिलाख, करहु सफल नरभव सदा।
उत्तम ब्रह्मचर्य मन आनौ, माता बहिन सुता पहिचानो;
सहैं बाणवर्षा बहु सूरे, टिकैंन नैन बान लखि कूरे।
कूरे तियाके अशुचि तनमें, कामरोगी रति करैं,
बहु मृतक सडहिं मसानमांही, काक ज्यों चोंचै भरें;
संसारमें विषवेल नारी, तजि गये जोगीश्वरा,
'द्यानत' धरम दश पैडि चढिकैं, शिवमहलमें पग धरा।
ॐ ह्रीँ उत्तमब्रह्मचर्यधर्मांगाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

दशलच्छन वंदौ सदा, मनवांछित फलदाय,
कहों आरती भारती, हम पर होहु सहाय। १
उत्तम छिमा जहां मन होई, अंतर बाहर शत्रु न कोई;
उत्तम मार्दव विनय प्रकासै, नानाभेद ज्ञान सब भासै। २
उत्तम आर्जव कपट मिटावै, दुरगति त्याग सुगति उपजावै;
उत्तम सत्यवचन मुख बोलै, सो प्रानी संसार न डोलै। ३

उत्तम शौच लोभ परिहारी, संतोषी गुनरतन भंडारी;
उत्तम संयम पालै ज्ञाता, नरभव सफल करै लै साता। ४
उत्तम तप निरवांछित पालै, सो नर करमशत्रुको टालै;
उत्तम त्याग करै जो कोई, भोगभूमि–सुरशिव–सुख होई। ५
उत्तम आकिंचनव्रत धारे, परमसमाधिदशा विसतारे,
उत्तम ब्रह्मचर्य मन लावै, नरसुरसहित मुक्तिफल पावै। ६

(दोहा)

करे करमकी निरजरा, भवपींजरा विनाशि;
अजर अमरपदकों लहे, 'द्यानत' सुखकी राशि।

ॐ ह्रीँ उत्तमक्षमा मार्दव, आर्जव, सत्य, शौच, संयम, तप, त्याग आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य दशलक्षणधर्माय महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देव-शास्त्र-गुरुका अर्घ

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूं,
वर धूप निरमल फल विविध बहु जनमके पातक हरूं;
इह भांति अर्घ चढाय नित भवि करत शिव पंकति मचूं,
अरहंत श्रुत–सिद्धांत गुरु–निरग्रंथ नित पूजा रचूं।
वसुविधि अर्घ संजोयके अति उछाह मन कीन;
जासों पूजों परम पद देव शास्त्र गुरु तीन।
ॐ ह्रीँ देव-शास्त्र-गुरुभ्य: अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर भगवानका अर्घ

जल गंध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आवने,
धाय चरन चढाय भविजन, मोक्षफलको पावने.
तीर्थपति जिनराजजीकी, परम पावन पूज करो;
श्री सीमंधरनाथकी सौ, भावसे भक्ति लहो।
ॐ ह्रीँ श्री सीमंधरनाथजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं०

श्री कुंदकुंदाचार्यदेवका अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य–मिश्रित, अर्घ कीजे पावना;
कुंदकुंदआदिक ऋद्धिधारक, मुनिनकी पूजा करूं;
ता करें पातिक हरें सारें, सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीँ श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व०

श्री भावी तीर्थंकरका अर्घ

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लई दीप धूप फळ अर्घ, जिनवर पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(–चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीँ धातकीद्वीप–विदेहक्षेत्रस्थ भावि जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति

श्री सुवर्णपुरी तीर्थका अर्घ

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीँ श्री सुवर्णपुरी–अध्यात्मतीर्थे जिनमन्दिरे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, पद्मप्रभ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ आदि जिनेन्द्र; समवसरणे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, तत्पादमूल–विराजमान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव; मानस्तम्भे चतुर्दिक्षु बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी; परमागममन्दिरे बिराजमान भगवान श्री महावीरस्वामी, श्री समयसार आदि पंचपरमागम, श्री कुन्दकुन्दाचार्य–चरणचिह्न; 'गुरुदेवश्रीके वचनामृत' तथा 'बहिनश्रीके वचनामृत' इति उभयाभ्यां विभूषित पंचमेरु–नन्दीश्वरजिनालये बिराजमान भगवान श्री आदिनाथ, धातकीखण्ड विदेही भावी तीर्थंकर, जम्बु–भरतस्य भावी श्री महापद्म जिनवर; पंचमेरौ तथा नन्दीश्वर–द्वापंचाशत्–जिनालये बिराजमान सर्व शाश्वत जिनेन्द्र; जम्बूद्वीप-बाहुबली निर्माणाधीन आयतने विराजमान सर्व कृत्रिम-अकृत्रिम-शाश्वत जिनेन्द्रः, स्वाध्यायमन्दिरे प्रतिष्ठित श्री समयसार–इत्यादि सर्व वीतरागपूज्यपदेभ्यः पूजनार्थे महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधरका अर्घ

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुखके दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है;
शांति सुधाकरकी शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर–भगवान, चरण-पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीं विदेही–भावि श्री देवेन्द्रकीर्तिगणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति

श्री बाहुबली भगवानका अर्घ

वसुविधिके वस वसुधा सब की, परवश अति दुःख पावे,
तिहि दुःख दूर करनको भविजन, अर्घ जिनाग्र चढावे।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
तिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी।

ॐ ह्रीँ वर्तमान अवसर्पिणीसमये प्रथम मुक्तिस्थानप्राप्ताय कर्मरिविजये वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबली परमजिनदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति.

श्री सिद्ध भगवानका अर्घ

जल फल वसु वृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा;
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम बन्दा।
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवननामी, अंतरजामी, अभिरामी,
शिवपुरविश्रामी, निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।

ॐ ह्रीँ अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं, सिद्ध पूजूं चाव सों,
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भाव सों।

अर्हंत–भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी,
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा,
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहीं कदा;
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं,
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।
कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजुं सदा,
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा;
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के,
नामावली इक सहस वसु जय होय प्रति शिवगेह के।

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय;
सर्व पूज्य पद पूजहुं, बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीँ भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करवी कराववी–भावना भाववी, श्री अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी–पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग–करणानुयोग–चरणानुयोग–द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि षोडश कारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः। जल विषे, थल विषे, आकाश विषे, गुफा विषे, पहाड विषे, नगर-नगरी विषे, ऊर्ध्वलोक–मध्यलोक–पाताललोक विषे बिराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन–चैत्यालय जिन–बिंबेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र विद्यमान वीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पांच भरत, पांच ऐरावत–दस क्षेत्र संबंधी त्रीस चोवीसीना सातसो वीस जिनेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीपसंबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलास, चंपापुर, पावापुर, गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबिद्री, मूडबिद्री, राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा, सुवर्णपुरी आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण–ऋद्धिधारी सात परमऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

(शान्तिपाठ बोलते वक्त दोंनों हाथोंसे पुष्पवृष्टि करना)

(चोपाई १६ मात्रा)

शांतिनाथ मुख शशि उनहारी, शीलगुणव्रतसंयमधारी;
लखन एक सौ आठ विराजै, निरखत नयन कमलदल लाजै।
पंचम चक्रवर्ति पदधारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी;
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिननायक, नमों शांतिहित शांति विद्यायक।
दिव्य विटप पहुपनकी वरषा, दुन्दुभी आसन वाणी सरसा;
छत्र चमर भामंडल भारी, ये तुव प्रातिहार्य मनहारी।
शांति जिनेश शांति सुखदाइ, जगतपूज्य पूजौं शिर नाइ;
परम शांति दीजैं हम सबको, पढैं तिन्हें पुनि चार संघको।

(वसंततिलका)

पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके;
सो शांतिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहिं शांति सदा अनूप।

(दोहा)

घातिकर्म जिन नाश करि, पायो केवलराज;
शांति करो सब जगतमें, वृषभादिक जिनराज।

विसर्जन

ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि शास्त्रोक्तं न कृतं मया;
तत्सर्वं पूर्णमेवास्तु त्वत्प्रसादाज्जिनेश्वर॥१॥
आह्वानं नैव जानामि नैव जानामि पूजनं;
विसर्जनं न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥२॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं द्रव्यहीनं तथैव च;
तत्सर्वं क्षम्यतां देव रक्ष रक्ष जिनेश्वर॥३॥

मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमो गणी;
मंगलं कुंदकुंदार्यो जैनधर्मोऽस्तु मंगलम्।।४।।
सर्वमंगल मांगल्यं, सर्वकल्याणकारकं;
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयतु शासनम्।।५।।

(पूजा पूर्ण होनेके बाद नौ बार नमस्कार मंत्रका जाप देना चाहिये)

चौवीस तीर्थंकरोकी आरती

अघहर श्री जिनबिंब मनोहर चौवीस जिनका करो भजन।
आज दिवस कंचन सम उगियो, जिनमंदिरमें चलो सजन। टेक

न्हवन थापना सहस्त्रनाम पढ, अष्टविधार्चन पूज रचन,
आरति अरु जयमाल स्तुति, स्वाध्याय त्रयकाल पठन;
जय जय आरति सुरनर नाचत, अनहद दुंदुभि बाजे बजन;
रत्नजडित कर थाल मनोहर, ज्योति अनुपम धूम्रतजन। अघ० १

ऋषभ, अजित, संभव सुखदाता, अभिनंदन के नमूं चरन,
सुमति, पद्मप्रभ, देव सुपारस, चन्द्रनाथ वपु शुभ्रवरन;
पुष्पदंत, शीतल, श्रेयांस अरु, वासुपूज्य भव तारनतरन,
विमल, अनंत, धर्मजिन शांति, कुंथु, अरह हर जन्ममरण। अघ० २

मल्लिनाथ, मुनिसुव्रत, नमिजिन, नेमि, पार्श्व हर अष्ट करम,
नाथवंश है उन्नत कर सत, अंतिम सन्मति देव शरन;
समवसरणकी अगणित शोभा, बार सभा उपदेश धरन,
जिन उद्धारक, त्रिभुवन तारक, राव–रंकको है जु शरन। अघ० ३

तीर्थंकर गुण–माल कंठकर, जाप जपो तिन करो कथन;
देव-शास्त्र-गुरु विनय करो, इन तीन रतनका करो जतन। अघ० ४

11th DAY POOJA

विनयपाठ

(दोहा)

इहि विधि ठाड़ो होयके, प्रथम पढै जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ॥१॥

अनंत चतुष्टयके धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति वधूके कंथ तुम, तीन भुवनके राज॥२॥

तिहुं जगकी पीडा हरण, भवदधिशोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्वके, शिवसुखके करतार॥३॥

हरता अघअंधियारके, करता धर्म प्रकाश।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुणराश॥४॥

धर्मामृत उर जलधिसों, ज्ञान भानु तुम रूप।
तुमरे चरण सरोजको, नावत तिहुं जगभूप॥५॥

में वंदौं जिनदेवको, कर अति निरमल भाव।
कर्मबंधके छेदने, और न कछु उपाय॥६॥

भविजनको भवकूपतैं, तुम ही काढनहार।
दीनदयाल अनाथपति, आतम गुण भंडार॥७॥

चिदानंद निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगतमें भविजनको शिव गैल॥८॥

तुम पद पंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रताको धरै, विष निरविषता थाय॥९॥

चक्री खगधर इन्द्र पद, मिलैं आपतें आप।
अनुक्रम कर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप॥१०॥

तुम विन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल विन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन॥११॥

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेय।
अंजनसे तारे कुधी, जय जय जय जिनदेव॥१२।

थकी नाव भवदधि विषे, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय जय जय जिनदेव॥१३॥

राग सहित जगमें रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भेटयौ अबै, मेटो राग कुटेव॥१४॥

कित निगोद, कित नारकी, कित तिर्यंच अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान॥१५॥

तुमको पूजें सुरपति, अहिपति नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव॥१६॥

अशरणके तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिंधुमें, खेओ लगाओ पार॥१७॥

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारकैं, कीजे आप समान॥१८॥

तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूब्यो जात हाँ, नेक निहार निकार॥१९॥

जो में कहहूं औरसों, तो न मिटै उरझार।
मेरी तो तौसों बनी, तातैं करौं पुकार॥२०॥

वंदो पाँचौं परमगुरु, सुरगुरु वंदत जास।
विघन हरन मंगल करन, पूरन परम प्रकाश॥२१॥

चौवीसौं जिनपद नमों, नमो शारदा माय।
शिवमग साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुखदाय॥२२॥

❀

पूजाकी प्रारंभिक विधि

ॐ जय जय जय, नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,

णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।

ॐ ह्रीँ अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः

(उपर्युक्त पाठ पढ़कर पुष्प यानी(अर्थात्) चंदनमिश्रित चावल थालीमें किये हुए स्वस्तिकके ऊपर चढ़ाना।)

मंगल

चत्तारि मंगलं—अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो धम्मो मंगलं।

चत्तारि लोगुत्तमा—अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि—अरहंते सरणं पव्वज्जामि, सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तो धम्मं सरणं पव्वज्जामि।

ॐ ह्रीँ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलि चढ़ाना)

उदकचन्दनतन्दुलपुष्पकैश्चरुसुदीपसुधूपफलार्घकैः;

धवलमंगलगानरवाकुले जिनग्रहे जिननाथमहं यजे।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीँ श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीँ श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीँ श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीँ श्रीसीमंधरतीर्थंकराय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीँ श्री चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीँ श्री कुंदकुंदाचार्यदेवाय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीँ श्रीसूर्यकीर्तिनाथजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

ॐ ह्रीँ श्री भगवज्जिनसहस्रनामेभ्यः अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षमावणी पूजा

(क्षमावणीना दिवसे–भादरवा वद अेकमना दिवसे करवानी पूजा)

(छप्पय)

अंग क्षमा जिन–धर्मतनो दृढ–मूल वखानो;
सम्यक् रतन संभाल हृदयमें निश्चय जानो,
तज मिथ्या–विष–मूल और चित निर्मल ठानो,
जिनधर्मीसों प्रीत करो सब पातक भानो;
रत्नत्रय गह भविकजन जिन–आज्ञा सम चालिये,
निश्चय कर आराधना करम–रासको जालिये।

ॐ ह्रीँ सम्यक्रत्नत्रय ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् इति आह्वाननम्।

ॐ ह्रीँ सम्यक्रत्नत्रय ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीँ सम्यक्रत्नत्रय ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।।

नीर सुगंध सुहावनो, पद्म–द्रहको लाय,
जन्म–रोग निरवारिये, सम्यक् रतन लहाय;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

केसर चंदन लीजिये, संग करपूर घसाय,
अलि पंकति आवत घनी, वास सुगंध सहाय;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शालि अखंडित लीजिये, कंचन–थाल भराय,
जिनपद पूजों भावसौं, अक्षत पदको पाय;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पारिजात अरु केतकी, पहुप सुगंध गुलाब,
श्रीजिन–चरण–सरोजकुं, पूज हर्ष चित–चाव;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

शक्कर धृत सुरभीतना, व्यंजन षट्रस स्वाद,
जिनके निकट चढायकर, हिरदे धरि आह्लाद;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यम् निर्वपामीति स्वाहा।

हाटकमय दीपक रचो, वाति कपूर सुधार,
शोधित धृत कर पूजिये, मोह–तिमिर निरवार;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागर करपूर हो, अथवा दशविधि जान,
जिन–चरणन ढिग खेईये, अष्ट–कर्मकी हान;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला अंब अनार ही, नारिकेल ले दाख,
अग्र धरो जिनपदतने, मोक्ष होय जिन भाख;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फव आदि मिलायके, अशघ करो हरषाय,
दुःख–जलांजलि दीजिये, श्रीजिन होय सहाय;
क्षमा गहो उर जीवडा, जिनवर–वचन गहाय।

ॐ ह्रीं अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

उनतिस अंगकी आरती, सुनो भविक चित लाय;
मन वच तन सरधा करो, उत्तम नर–भव पाय।

(चौपाई)

जैनधर्ममें शंक न आनै, सो निःशंकति गुण चित ठानै;
जप तप कर फल वांछै नाहीं, निःकांक्षित गुण हो जिस मांहीं।
परको देख गिलानी न आनै, सो तीजा सम्यक् गुण ठानै;
आन देवको रंच न मानै, सो निर्मूढता गुण पहिचानै।
परको औगुण देख जु ढांकै, सो उपगूहन श्रीजिन भाखै;
जैनधर्मतैं डिगता देखै, थापे बहुरि स्थिति कर लेखै।
जिन-धरमीसों प्रीत निवहिये, गउ–वच्छवत वच्छल कहिये;
ज्यों त्यों करि उद्योत बढावै, सो प्रभावना अंग कहावै।
अष्ट अंग यह पालै जोई, सम्यग्दृष्टि कहीअे सोई;
अब गुण आठ ज्ञानके कहिये, भाखे श्री जिन मनमें गहिये।
व्यंजन अक्षर सहित पढीजै, व्यंजन–व्यंजित अंग कहीजै;
अर्थ सहित शुद्ध शब्द उचारै, दूजा अर्थ समग्रह धारै।
तदुभव तीजा अंग लखीजै, अक्षर-अर्थ सहित जु पढीजै;
चौथा कालाध्ययन विचारै, काल समय लखि सुमरण धारै।

पंचम अंग उपधान बतावै, पाठसहित तब बहु फल पावै;
षष्टम विनय सुलब्धि सुनीजै, वाणी बहुत विनय सु पढीजै।
जापै पढै न लोपै जाई, अंग सप्तम गुरुवाद कहाई;
गुरुकी बहुत विनय जु करीजे, सो अष्टम अंग धर सुख लीजे।
यह आठों अंग–ज्ञान पढावै, ज्ञाता मन वच तन कर ध्यावै;
अब आगे चारित्र सुनीजे, तेरह–विधि धर शिव–सुख लीजे।
छहों कायकी रक्षा कर हैं, सोई अहिंसा व्रत चित धर हैं;
हित मित सत्य वचन मुख कहिये, सो सतवादी केवल लहिये।
मन वच काय न चोरी करिये, सोई अचौर्य–व्रत चित धरिये,
मनमथ–भय रंच न आनै, सो मुनि ब्रह्मचर्य–व्रत ठानै।
परिग्रह देख न मूर्छित होय, पंच महाव्रत–धारक सोई;
महाव्रत ये पांचो खरे हैं, सब तीर्थंकर ईनको करे हैं।
मनमें विकलप रंच न होई, मनोगुप्ति मुनि कहिये सोई;
वचन अलीक रंच नहि भाखैं, वचनगुप्ति सो मुनिवर राखैं।
कायोत्सर्ग परीषह सहि है, ता मुनि कायगुप्ति जिन कहि है;
पंच समिति अब सुनिये भाई, अर्थ सहित भाखे जिनराई।
हाथ चार जब भूमि निहारे, तब मुनि ईर्यापथ पद धारें;
मिष्ट वचन मुख बोलें सोई, भाषा–समिति तास मुनि होई।
भोजन छयालिस दूषण टारें, सो मुनि अेषण शुद्ध विचारें;
देखकर पोथी लें अरु धर हैं,सो आदान–निक्षेपण वर हैं।
मल–मूत्र अेकांत जु डारें, प्रतिष्ठापन समिति संभारें;
यह सब अंग उनतीस कहे हैं, जिन भाखे गणधरने गहे हैं।
आठ–आठ–तेरहविधि जानों, दर्शन–ज्ञान–चारित्र सुठानों;
तातें शिवपुर पहुंचो जाई, रत्नत्रयकी यह विधि भाई।
रत्नत्रय पूरण जब होई, क्षमा क्षमा करियो सब कोई;
चैत माघ भादों त्रय वारा, क्षमा क्षमा हम उरमें धारा।

(दोहा)

यह क्षमावणी आरती, पढै सुनै जो कोय;
कहे 'मल्ल' सरधा करो, मुक्ति–श्री–फल होय।

ॐ ह्रीँ अष्टांगसम्यग्दर्शनाय अष्टविधसम्यग्ज्ञानाय त्रयोदशविधसम्यक्चारित्राय रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

(सोरठा)

दोष न गहियो कोय, गुण गह पढिये भावसौं;
भूलचूक जो होय, अर्थ विचारि जु शोधियो।

॥ इत्याशीर्वादः, परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥

देव-शास्त्र-गुरुका अर्घ

जल परम उज्ज्वल गंध अक्षत पुष्प चरु दीपक धरूं,
वर धूप निरमल फल विविध बहु जनमके पातक हरूं;
इह भांति अर्घ चढाय नित भवि करत शिव पंकति मचूं,
अरहंत श्रुत–सिद्धांत गुरु–निरग्रंथ नित पूजा रचूं।
वसुविधि अर्घ संजोयके अति उछाह मन कीन;
जासों पूजों परम पद देव शास्त्र गुरु तीन।

ॐ ह्रीँ देव-शास्त्र-गुरुभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर भगवानका अर्घ

पावन जल चंदन, अक्षत पुष्प रु, चरु वर दीपन, धूप धरों;
वर अर्घ उतारो, तुम पद धारो, नंदन तारो, पूज करो।
चरम तीर्थंकर जगत हितंकर, हे अभयंकर, वीर जिनं,
सब कर्म क्षयंकर, दया धुरंधर, जगजन शंकर, शर्म घनं।

ॐ ह्रीँ श्रीमहावीरजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ भगवानका अर्घ

आठ विधि सौ अर्घ करिये आठ कर्म जु छीनवे,
मैं करहुं भविजन भगत प्रभुकी 'जसकरण' ऐ वीनवै,
श्री शान्तिनाथ जिनेश पूजौं भावसौं मन लायकैं;
शान्त करियौ कर्म सबरे मोक्षलक्ष्मी पायकैं.

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चंद्रप्रभु भगवानका अर्घ

वसुविधि अर्घ बनाय मनोहर श्री जिनमंदिर जावो,
अष्टकर्मके नाश करनको श्री जिनचरन चढावो;
चंचल चितको रोकी, चतुर्गति चक्र भ्रमण निरवारो,
चारु चरण आचरण चतुर नर चंद्रप्रभ चित धारो.

ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभुजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री नेमिनाथ भगवानका अर्घ

सलिल सुच्छ मलयागिर चंदन, अछित कुसुम चरु भरि थारी,
मणिदीप दसांग धूप फल उत्तम, अर्घ 'राम' करि सुखकारी;
श्री नेमि जिनेश्वरके पद वंदूं, रजमति सी ततछिन छारी,
पसुवनिकी रव सुनिकैं करुणा धरि, जाय चढे प्रभु गिरनारी.

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सीमंधर भगवानका अर्घ

जल गंध आदिक द्रव्य लेके, अर्घ कर ले आवने,
धाय चरन चढाय भविजन, मोक्षफलको पावने.
तीर्थपति जिनराजजीकी, परम पावन पूज करो;
श्री सीमंधरनाथकी सौ, भावसे भक्ति लहो।

ॐ ह्रीं श्री सीमंधरनाथजिनेन्द्रदेवाय चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुंदकुंदाचार्यदेवका अर्घ

जल गंध अक्षत पुष्प चरुवर, दीप धूप सु लावना,
फल ललित आठों द्रव्य-मिश्रित, अर्घ कीजे पावना;
कुंदकुंदआदिक ऋद्धिधारक, मुनिनकी पूजा करूं;
ता करें पातिक हरें सारें, सकल आनंद विस्तरूं।

ॐ ह्रीं श्रीकुंदकुंदआदि मुनिराज चरणकमलपूजनार्थे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्व॰

श्री भावी तीर्थंकरका अर्घ

जल गंध सुअक्षत पुष्प, शुभ नैवेद्य धरुं,
लई दीप धूप फळ अर्घ, जिनवर पूज करुं;
अहो! धातकीखंड जिणंद भावी मनहारी,
जंबू-भरते जयवंत, शिव - मंगळकारी।
(—चेन्नाई वर्ते जयवंत, शिव - मंगळकारी।)

ॐ ह्रीं धातकीद्वीप—विदेहक्षेत्रस्थ भावि जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति

श्री सुवर्णपुरी तीर्थका अर्घ

भरि स्वर्णथाल वसु द्रव्य अर्चूं कर जोरि,
प्रभु सुनियो विनती नाथ, कहूं मैं भाव धरि,
अनुभूति तीर्थमहान सुवर्णपुरी सोहे,
यह कहानगुरु वरदान मंगल मुक्ति मिले।

ॐ ह्रीं श्री सुवर्णपुरी—अध्यात्मतीर्थे जिनमन्दिरे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, पद्मप्रभ, शान्तिनाथ, नेमिनाथ आदि जिनेन्द्र; समवसरणे बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी, तत्पादमूल—विराजमान श्री कुन्दकुन्दाचार्यदेव; मानस्तम्भे चतुर्दिक्षु बिराजमान श्री सीमन्धरस्वामी; परमागममन्दिरे बिराजमान भगवान श्री महावीरस्वामी, श्री समयसार आदि पंचपरमागम, श्री कुन्दकुन्दाचार्य—चरणचिह्न; 'गुरुदेवश्रीके वचनामृत' तथा 'बहिनश्रीके वचनामृत' इति उभयाभ्यां विभूषित पंचमेरु-नन्दीश्वरजिनालये बिराजमान भगवान श्री आदिनाथ, धातकीखण्ड विदेही भावी तीर्थंकर, जम्बु—भरतस्य भावी श्री महापद्म जिनवर; पंचमेरौ तथा नन्दीश्वर—द्वापंचाशत्-जिनालये बिराजमान सर्व शाश्वत जिनेन्द्र; जम्बूद्वीप-बाहुबली निर्माणाधीन आयतने विराजमान सर्व कृत्रिम-अकृत्रिम-शाश्वत जिनेन्द्रः, स्वाध्यायमन्दिरे प्रतिष्ठित श्री समयसार—इत्यादि सर्व वीतरागपूज्यपदेभ्यः पूजनार्थे महार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

देवेन्द्रकीर्ति भावि विदेही गणधरका अर्घ

(राग-दयानिधि हो)

पावन जिनका नामस्मरण, मंगल सुखके दाता है,
धन्य धन्य अवतार प्रभु, त्रिभुवन कीर्तन गाता है;
शांति सुधाकरकी शीतल, शीकर भवदुःखहारी है,
देवेन्द्रकीर्ति गणधर–भगवान, चरण-पूजा सुखकारी है।

ॐ ह्रीं विदेही–भावि श्री देवेन्द्रकीर्तिगणधरदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं नि०

श्री बाहुबली भगवानका अर्घ

वसुविधिके वस वसुधा सब की, परवश अति दुःख पावे,
तिहि दुःख दूर करनको भविजन, अर्घ जिनाग्र चढावे।
परम पूज्य वीराधिवीर जिन, बाहुबली बलधारी,
तिनके चरणकमलको नित प्रति, धोक त्रिकाल हमारी।

ॐ ह्रीँ वर्तमान अवसर्पिणीसमये प्रथम मुक्तिस्थानप्राप्ताय कर्मरिविजये वीराधिवीर वीराग्रणी श्री बाहुबली परमजिनदेवाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति०

श्री सिद्ध भगवानका अर्घ

जल फल वसु वृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा;
मेटो भवफंदा सब दुखदंदा, 'हीराचंदा' तुम बन्दा।
त्रिभुवनके स्वामी त्रिभुवननामी, अंतरजामी, अभिरामी,
शिवपुरविश्रामी, निजनिधि पामी, सिद्ध जजामी शिरनामी।

ॐ ह्रीँ अनाहतपराक्रमाय सर्वकर्मविनिर्मुक्ताय श्रीसिद्धचक्राधिपतये अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ

(गीता छंद)

मैं देव श्री अर्हंत पूजूं, सिद्ध पूजूं चाव सों,
आचार्य श्री उवझाय पूजूं, साधु पूजूं भाव सों।

अर्हंत–भाषित वैन पूजूं, द्वादशांग रचे गनी,
पूजूं दिगंबर गुरुचरन, शिव हेत सब आशा हनी।
सर्वज्ञभाषित धर्म दशविधि दयामय पूजूं सदा,
जजि भावना षोडश रतनत्रय जा विना शिव नहीं कदा;
त्रैलोक्यके कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय जजूं,
पन मेरु नंदीश्वर जिनालय खचर सुर पूजित भजूं।
कैलास श्री सम्मेद श्री गिरनार गिरि पूजुं सदा,
चंपापुरी पावापुरी पुनि और तीरथ सर्वदा;
चौबीस श्री जिनराज पूजूं बीस क्षेत्र विदेह के,
नामावली इक सहस वसु जय होय प्रति शिवगेह के।

(दोहा)

जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय;
सर्व पूज्य पद पूजहुं, बहु विध भक्ति बढाय।

ॐ ह्रीँ भावपूजा, भाववंदना, त्रिकालपूजा, त्रिकालवंदना करवी कराववी– भावना भाववी, श्री अरिहंतजी, सिद्धजी, आचार्यजी, उपाध्यायजी, सर्वसाधुजी– पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग–करणानुयोग–चरणानुयोग–द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि षोडश कारणेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-सम्यग्ज्ञान-सम्यक्‌चारित्रेभ्यो नमः। जल विषे, थल विषे, आकाश विषे, गुफा विषे, पहाड विषे, नगर-नगरी विषे, ऊर्ध्वलोक–मध्यलोक– पाताललोक विषे बिराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन–चैत्यालय जिन–बिंबेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र विद्यमान वीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पांच भरत, पांच ऐरावत–दस क्षेत्र संबंधी त्रीस चोवीसीना सातसो वीस जिनेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीपसंबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलास, चंपापुर, पावापुर, गिरनार आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबिद्री, मूडबिद्री, राजगृही, शत्रुंजय, तारंगा, सुवर्णपुरी आदि तीर्थक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारण–ऋद्धिधारी सात परमऋषिभ्यो नमः। इति उपर्युक्तेभ्यः सर्वेभ्यो अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ

शांतिजिनेश्वर साचो साहेब, शांतिकरण अनुकूलमें हो जिनजी;
तुं मेरा मनमें तुं मेरा दिलमें, ध्यान धरूं पल पलमें साहेबजी;
तुं. मेरा० १

भवमां भमतां मैं दरिशन पायो, आशा पूरो अेक पलमें हो जिनजी
तुं. मेरा० २

निरमल ज्योत वदन पर सोहे, निकस्यो ज्युं चंद वादळ में जिनजी
तुं. मेरा० ३

मेरो मन तुम साथे लीनो, मीन वसे ज्यु जळमें साहेबजी;
तुं. मेरा० ४

जिन रंग कहे प्रभु शांतिजिनेश्वर, दीठोजी देव सकळमें हो जिनजी.
तुं. मेरा० ५

विसर्जन

परमेश्वर परमात्मा, पावन तू परमिट्ठ;
जय जगगुरु देवाधिदेव, नयणें में दिट्ठ। १

अचल अकल अविकार सार, करुणारस सिंधु;
जगति जन आधार अेक, निष्कारण बंधु। २

गुण अनंत प्रभु ताहरा अे, किमही कळ्या न जाय;
भक्ति धरुं जिन ध्यानथी, चिदानंद सुख थाय। ३

(पूजा पूर्ण होनेके बाद नौ बार नमस्कार मंत्रका जाप देना चाहिये)

पंच परमेष्ठीकी आरती

(राग–आरती)

आनंदमंगळ करूं आरती, संतचरणनी सेवा. टेक०
शिवसुखकारण विघ्न निवारण, पंचपरमेष्ठि देवा. आनंद०

प्रथम आरती अरिहंत देवा, कर्म खपे तत्खेवा;
सो इन्द्र करे तुम सेवा, वाणी अमृत मेवा. आनंद०

बीजी आरती सिद्ध निरंजन, भंजन भवभयकेरा;
चिदानंद सुखकंद अखंड, मिटे भवोभव फेरा. आनंद०

त्रीजी आरती श्री आचार्यजी, पंचाचार पाळे रूडा;
संघशिरोमणि शोभे दिनमणि, दाता बोध अनेरा. आनंद०

चोथी आरती उपाध्यायजी, भणे भणावे अेवा;
सूत्र अर्थ करे तत्खेवा, सेवा करे तस देवा. आनंद०

पंचमी आरती सर्व साधुजी, भारंड पंखी जेवा;
आत्मस्वरूप साधे दूषण टाळे, अविचळ शिवसुख लेवा. आनंद०

गाय शीखे ने सूणे आरती, भविजन भावे अेवा;
तेहतणा पातक दूर जाअे, नित्य नित्य मंगळ मेवा. आनंद०

भाव धरीने गावे आरती, पंच परमेष्ठी देवा;
भक्तजन भावे गुण गावे, लेवा शिवसुख मेवा. आनंद०